खोजनेवाले

बाइबल अध्ययन श्रृंखला

"तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा"
(यूहन्ना 8:32)

"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो"
(2 तीमुथियुस 2:15)

© Copyright by World Literature Publications,
Winona, MS 38967, USA

Translated in Hindi by :
Vinay David

Published by :
CHURCH OF CHRIST
Box-4398
New Delhi-110019
E-mail: vinay_david2002@yahoo.co.in
davidfrancis53@rediffmail.com

Printed at Simran Print House, New Delhi

विषय-सूची

		पृष्ठ
	परिचय	5
	आवश्यक निर्देश	7
1.	बाइबल क्या है?	9
2.	यीशु-परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र	19
3.	पाप की समस्या	27
4.	पाप से मुक्ति	35
5.	पानी का बपतिस्मा	45
6.	कलीसिया	53
7.	सच्ची उपासना	61
8.	मसीह में नया जीवन	71

परिचय

यदि आप यह जानना चाहते हैं कि बाइबल क्या शिक्षा देती है, तो व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन के मुकाबले में कोई और अच्छा तरीक़ा नहीं है। सबसे पहिले आप अपनी बाइबल को पढ़िए। और दूसरा यह, कि आप एक ऐसा बाइबल कॉर्स का चयन करें जो आपको इस बात को समझने में मदद करे, कि वास्तव में बाइबल क्या सिखाती है? फिर भी आपको इस बात को ध्यान में रखने की आवश्यकता है, कि जिन बाइबल पाठों का आप अध्ययन करते हैं, वह न केवल पूरी तरह से बाइबल की शिक्षा पर आधारित हो बल्कि समझने में भी सरल और स्पष्ट हो।

लगभग 2 वर्ष पहिले जब मैं फिलिपिन्स देश में था, तब मैंने इस बाइबल अध्ययन को देखा था। फिलिपिन देश के मसीही लोग इन बाइबल पाठों का इस्तेमाल अपने बाइबल अध्ययन के लिये कर रहें थे। जब मैंने इस कॉर्स को पढ़ा, तो मुझे यह पूरी तरह से बाइबल पर आधारित, और पढ़ने में सरल तथा स्पष्ट लगा। इस कॉर्स में एक मसीही बनने, और प्रभु की कलीसिया का एक सदस्य बनने के बारे में साफ़-साफ़ तरीके से बताया गया है। यह बाइबल कॉर्स बहुत संक्षिप्त है, अर्थात् यह बहुत सारे पाठों से भरा हुआ एक लंबा कॉर्स नहीं है। इसलिये मैंने यह निश्चय किया कि मैं इसे भारत के दूसरे बाइबल अध्ययनों के साथ शामिल करुं।

परमेश्वर आपको आशीषित करे जब आप इस बाइबल अध्ययन को करते हैं, और इसके साथ-साथ हम आपको प्रोत्साहित करते है, कि आप अपने मित्रों को यह कॉर्स करने का निमंत्रण दें।

जे. सी. चोट
(J.C. CHOATE)

आवश्यक निर्देश

प्रस्तुत पुस्तक में आठ पाठ हैं। पाठक को चाहिए कि वह प्रत्येक पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़े, और सारे पाठों को अच्छी तरह से पढ़ लेने के बाद ही, पुस्तक के अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश करें।

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देते समय पाठक को चाहिए कि वह सम्बन्धित पाठ पर फिर से नज़र डाले। सभी प्रश्नों के सही उत्तर उस से सम्बन्धित पाठ में दिए गए हैं।

सभी प्रश्न-पत्रों को उत्तर सहित निम्नलिखित पते पर भेज दें, और लिफ़ाफे पर उचित डाक टिकट लगाकर **अपना नाम और पता साफ़ अक्षरों में लिखना न भूलें**। प्रश्न पत्रों को पुस्तक में से निकालकर हमारे पते पर जांचने के लिये भेज दें। पाठों को जांचकर एक सुन्दर प्रमाण-पत्र के साथ आपको भेज दिया जायेगा।

विनय डेविड
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स नं. 4398
नई दिल्ली-110019

पाठ एक

बाइबल क्या है?

यह पुस्तक क्या है, जिसे हम बाइबल कहते हैं? हम देखते हैं कि बाइबल पुस्तकों का एक संग्रह हैं, जिसे लगभग चालीस अलग-अलग लेखकों ने सोलहसों वर्षों के दौरान लिखा था। अर्थात् , 1500 ईसवी पूर्व से लेकर 100 ईसवी सन तक। इन चालिस लेखकों ने अपनी बुद्धि, ज्ञान, और समझ से परमेश्वर के वचन को नहीं लिखा, परन्तु जो कुछ भी इन लेखकों ने लिखा वो सारी बातें उन्हों ने परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी थीं।

> "क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:21)।

एक और आयत हमें बताती हैं कि:

> "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए" (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

हालांकि इन शब्दों को मनुष्यों द्वारा लिखा गया था, लेकिन इस संदेश का लेखक परमेश्वर है। बाइबल उन सच्चाईयों को हमारे सामने रखती है जिसके बारे में मनुष्यजाति या मानवजाति को जानने की आवश्यकता हैं। क्योंकि बाइबल में पाई गई बातें महत्वपूर्ण हैं, इसी बात को ध्यान में रखते हुए परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल में हमारे लिये कुछ चेतावनियां दी हैं, ताकि हम उसकी शिक्षा या उसके वचन को अपनी सुविधा के लिए न बदलें। परमेश्वर की व्यवस्था की एक आज्ञा जो कि मूसा ने इस्राएलियों को दी थी, वो यह थी कि:

> "जो आज्ञा में तुम को सुनाता हूं उस में न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना; तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूं उन्हें तुम मानना" (व्यवस्थाविवरण 4:2)।

यह जानना हमारे लिये बड़ा आवश्यक हैं कि बाइबल वास्तव में हमें क्या सिखाती हैं? क्योंकि यदि हम इस बात से अंजान हैं कि बाइबल वास्तव में हमें क्या सिखाती हैं, तो हम न तो परमेश्वर की इच्छा को जान पाएंगे, और न ही हम उसे प्रसन्न कर पाएंगे। परमेश्वर उन्हीं को प्रतिफल देगा जो उससे प्रेम करते हैं, और उसकी इच्छा पर चलते हैं।

"जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता हैं" (मत्ती 7:21)।

कौन सा परमेश्वर?

आज के संसार में हम देखते हैं कि अनेक देवी-देवताएं हैं जिन्हें मनुष्य पूजता हैं। परन्तु, एक सवाल जो मेरे मन में आता है वह यह है कि "किस परमेश्वर की आप बात कर रहें हो? दो हज़ार वर्ष पहिले प्रेरित पौलुस ने इसी सवाल का सामना किया था जब वह अथेने शहर में आया था। यह शहर पूरी तरह से मूरतों से भरा हुआ था" (प्रेरितों 17:16)। पौलुस, यीशु के बारे में प्रचार कर रहा था जो कि बाइबल अध्ययन की श्रृंखला के पाठ दो का चर्चा का विषय है। किन्तु, क्योंकि यह शिक्षा उनके कानों के लिये अनोखी थी, इसलिये लोगों ने पौलुस से कहा था, कि वह इस बात को और अच्छी तरह से उन्हें समझाएं। तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़े होकर कहा:

> "हे अथेने के लोगों मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था कि "अनजाने ईश्वर के लिये।" सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं। जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर

मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है" (प्रेरितों 17:22-25)।

बाइबल का परमेश्वर कोई स्थानीय ईश्वर नहीं है, और ना ही वो अनेक देवी-देवताओं में से एक है। वो तो पूरे जगत का परमेश्वर है, जिसने सारी वस्तुओं को बनाया है जो आप पृथ्वी और आकाश मे देखते हैं। इस सच्चाई को हम बाइबल की पहली पुस्तक की पहली आयत में इस प्रकार से देखते हैं।

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:1)।

इसी पहिले अध्याय की उत्पत्ति की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर बहुवचन है यानि एक से अधिक। न केवल हम परमेश्वर की आत्मा के बारे में पढ़ते हैं (उत्पत्ति 1:2), परन्तु हम यह भी पढ़ते है कि, "फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं" (उत्पत्ति 1:26)। वास्तव में परमेश्वरत्व में हिस्सेदारी रखने वाले तीन तत्व हैं, पिता परमेश्वर, परमेश्वर का वचन (यीशु मसीह नए नियम में), और परमेश्वर की आत्मा यानि पवित्र आत्मा। यह तीनों एक हैं। "हे इसराएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर, यहोवा एक ही हैं" (व्यवस्थाविवरण 6:4)।

बाइबल हमें यह भी बताती हैं कि परमेश्वर मनुष्य की तरह नहीं है। हम बाहरी दृष्टिकोण से शरीरिक हैं (हमारी आत्मा हमारे अन्दर वास करती हैं) "परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना 4:24)।

क्योंकि हम परमेश्वर की सृष्टि हैं, और उसी ने हमें रचा हैं, इसलिए हमारा सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर हमसे काफ़ी अलग है, अर्थात् परमेश्वर का स्थान हमसे बहुत अधिक ऊंचा है। हम अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के बराबर नहीं हैं। इसी कारण हम परमेश्वर के स्वभाव को पूरी तरह से नहीं समझ सकते जब हम अपनी इन शारीरिक देहों में जीते हैं, हम परमेश्वर का चरित्र और उसकी इच्छा को जान सकते हैं क्योंकि उसने यह बातें अपने वचन, अर्थात् बाइबल में प्रकट की हैं।

बाइबल क्या हैं?

बाइबल को कई भागों में बांटा गया है। पुराना नियम और नया नियम, बाइबल के दो मुख्य भाग हैं। बाइबल में छियासठ पुस्तकें हैं जो अलग-अलग नामों से जानी जाती हैं। बाइबल का पहला भाग जो कि पुराना नियम है, उसमें उन्तालिस किताबें हैं, और उसके दूसरे भाग में जो की नया नियम है, सत्ताईस किताबें हैं।

पुराने नियम की पहिली पांच किताबें लगभग 1500 ई. पूर्व में लिखी गई थीं, तथा बाकि की चौंतीस पुस्तकें ग्यारह सौ वर्षों में लिखी गई थीं, और यह किताबें चार मुख्य भागों में बटी हुई हैं। पहिले भाग में मूसा की लिखी हुई पांच किताबें हैं, जिसे व्यवस्था का नाम दिया गया हैं। उत्पत्ति, जो इस भाग की पहिली किताब है, हमें बताती हैं कि किस तरह से संसार की रचना हुई है। यह किताब सारांश में हमें ख़ास-ख़ास बातों से परीचित कराती हैं जो कि मनुष्य के पहिले दो हज़ार सालों में गुज़रा था जैसे, संसार की सबसे बड़ी बाढ़ या जल प्रलय जिसने सब कुछ नाश कर दिया था। किन्तु हम देखते हैं कि इस बाढ़ में केवल आठ लोग ही बच पाये थें क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया था।

इस महान बाढ़ (जल प्रलय) के बाद मनुष्य ने परमेश्वर का फिर से विरोध किया, इसलिए परमेश्वर ने अपने एक ख़ास कार्य के लिए एक आदमी को चुना जिसका नाम इब्राहीम था। उसकी वंशावलियां (जो बाद में इस्राएल राष्ट्र के नाम से जानी गईं) परमेश्वर के विशेष लोग बने। परमेश्वर ने मूसा के ज़रिए उनको अपनी पवित्र व्यवस्था दी, और उनके पास यह सुअवसर था कि उनकी जाति के द्वारा यीशु मसीह का जन्म इस संसार में हो।

यीशु ही है जो इस संसार में हमारे पापों का दाम चुकाने के लिए आया, ताकि हमें यह अवसर मिले कि हमारे पापों से हमें क्षमा मिल सके।

उत्पत्ति की पुस्तक की समाप्ति के बाद, हम देखते हैं कि परमेश्वर के लोग मिस्त्र देश में रह रहे हैं। निर्गमन की पुस्तक में हम देखते हैं कि

इस्राएलियों को गुलाम बना लिया गया था, और परमेश्वर उन्हें स्वतंत्र कराने के लिये मूसा को भेजता हैं। परमेश्वर फिर उन्हें अपनी व्यवस्था देता हैं, और उनको बताता हैं कि किस तरह से उन्हें उसकी उपासना करनी चाहिए (लैव्यव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण)।

निम्नलिखित बारह पुस्तकें पुराने नियम की किताबें हैं (यहोशू से लेकर एस्तेर तक) जिसमें इस्त्राएल राष्ट्र के निर्धारित अगले एक हज़ार सालों के इतिहास का विवरण हैं। अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, और सभोपदेशक ज्ञान का साहित्य है। स्वभाव में यह साहित्य काव्यात्मक हैं यानि इसमें काफ़ी कविताओं का इस्तेमाल किया गया हैं। इस साहित्य में हम बहुत से गीत, नाटक, और कहावतें पाते हैं। आखिरी की सत्रह किताबें भविष्यद्वक्ताओं ने लिखी थीं जो उस एक हज़ार साल के इतिहास के समय के दौरान जीवित थें, और जिन्होंने लोगों को परमेश्वर के वचन के बारे में सिखाया था।

नया नियम हमारा ध्यान यीशु की ओर ले जाता हैं जो की इस संसार में आया, ताकि हमें हमारे पापों से मुक्ति दिला सकें। उसका पृथ्वी का जीवन इन किताबों (मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना) का ख़ास अध्ययन का विषय हैं। इन किताबों में हम उसके कुंवारी से जन्म लेने की बात को पढ़ते हैं, और इसके साथ-साथ हम यीशु की दूसरी बातों का भी विवरण इन किताबों में पाते हैं जैसे, उसकी शिक्षाएं, हमारें पापों के लिए क्रूस पर उसका मारा जाना, मृत्यु के बाद उसका कब्र में गाड़े जाना, और फिर तीसरे दिन उसका मरे हुओं मे से जी उठना।

प्रेरितों के काम की किताब की शुरूआत सुसमाचार से हुई, जिसके बारे में पूरी मनुष्यजाति में प्रचार किया गया कि यीशु ने हमें हमारे पापों से मुक्ति दिलाई हैं। हम देखते हैं कि पापों की क्षमा उपलब्ध हैं। आगे हम और देखतें हैं कि जो लोग उद्धार पाएं हुए हैं यानि जिन लोगों ने मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास किया, और अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा पाने के लिए जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लिया हैं, मसीह (परमेश्वर) उन सब को अपनी कलीसिया में मिला देता हैं, वो कलीसिया जो विश्वासियों की एक देह है, और जिसका सिर यीशु मसीह है। रोमियों की

किताब से लेकर यहूदा की पत्री तक हम मसीहियत के बारे में देखते हैं, जिसमें इस बात का भी विवरण है कि किस तरह से हमें अपने परमेश्वर की उपासना और सेवा करनी चाहिए। अर्थात् किस तरह से यीशु के दोबारा लौटने तक, जब यह संसार पूरी तरह से समाप्त या नाश हो जाएगा, और सब लोगों का न्याय अपने कामों के अनुसार होगा, हमें किस तरह से अपने जीवते परमेश्वर की उपासना और सेवा करनी चाहिए।

प्रकाशितवाक्य की किताब भविष्य सूचक है। यद्यपि हम अपने जीवन में बहुत सी समस्याओं का सामना करते हैं, परन्तु यह किताब हम सब को यह आश्वासन देती हैं कि परमेश्वर अपने बच्चों की चिन्ता करता हैं, और जो बच्चे उसके वफ़ादार बनकर रहेगें, परमेश्वर उनकों प्रतिफल देगा। अपने विश्वासयोग्य लोगों को वह प्रतिफल देगा।

सारी नए नियम की किताबें 40 ई. सन से लेकर 100 ई. सन के बीच में लिखी गई थीं।

पाठ एक के प्रश्न

खाली स्थानों को सही उत्तरों से भरिए।

1. बाइबल .... पुस्तकों का एक संग्रह हैं, जिसे लगभग .... अलग-अलग लेखकों ने .... ईस्वी से लेकर .... ए.डी. तक लिखीं।
2. भक्त जन .... के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।
3. हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की .... से रचा गया है।
4. बाइबल हमें वास्तव में क्या सिखाती हैं, इस बात को जानने के बाद ही हम .... सकते हैं कि परमेश्वर की .... क्या हैं।
5. केवल एक ही परमेश्वर है जिसने इस .... को और उसमे पाई जानी सब चीज़ों को बनाया है।
6. आदि में परमेश्वर ने .... और .... की सृष्टि की।
7. वो तीन जो परमेश्वरत्व में हिस्सेदारी रखते हैं वो हैं : ...., ..., और .... ।
8. पुराने नियम में .... किताबें हैं, और नए नियम में .... किताबें हैं।
9. बाइबल की पहली पांच किताबों को .... कहा जाता हैं, और यह किताबें .... ने लिखी थीं।
10. परमेश्वर ने अपने एक ख़ास कार्य के लिए एक आदमी को चुना जिसका नाम .... था। उसकी वंशावलियां .... जाति के नाम से जानी जाएगी। उसी जाति के द्वारा .... का जन्म इस संसार में होगा।

11. बारह पुराने नियम की किताबें (यहोशू से लेकर एस्तेर तक) .... राष्ट्र के एक हज़ार सालों तक का इतिहास इन किताबों में दर्ज हैं।

12. नया नियम हमारा ध्यान .... पर ले जाता हैं जो कि इस .... में आया, ताकि हमें हमारे .... से .... दिला सकें।

निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत लिखें।

1. .... बाइबल के लेखकों ने परमेश्वर के विचारों को छोड़ अपने विचारों को लिखा।
2. .... परमेश्वर इस बात पर कोई ध्यान नहीं करता यदि मनुष्य अपनी सुविधा के लिये उसके वचन को बदल ड़ाले।
3. .... जो कोई पिता की इच्छा को पूरा करता है वो ही परमेश्वर को पंसद आता है।
4. .... इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम किस परमेश्वर की उपासना और सेवा करते हैं।
5. .... जगत के परमशेवर को किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है।
6. .... परमेश्वर आत्मा है, लोहू और मांस नहीं।
7. .... पुराने नियम की किताबों में हम इतिहास, काव्य, और भविष्यवाणी के अंश पाते हैं।
8. .... नया नियम यीशु के बारे में है। इस नियम की सारी किताबें ए.डी. 40 और 100 के बीच में लिखी गई थीं।
9. .... रोमियों से यहूदा की पत्री तक हम मसीहियत के बारे में देखते हैं।
10. .... नए नियम की इतिहास की किताब को प्रकाशितवाक्य कहा गया है।
11. .... परमेश्वर उन्हीं को प्रतिफल देगा जो उससे प्रेम करते हैं, और उसकी इच्छा पर चलते हैं
12. .... यह जानना हमारे लिये काफ़ी आवश्यक हैं कि बाइबल वास्तव में हमें क्या सिखाती हैं, ताकि हमारी सेवा उसे स्वीकारयोग्य हो, और हम उसको प्रसन्न कर सकें।

बाइबल

बाइबल में हम कई ज़रूरी बातों का विवरण पातें हैं जैसे, परमेश्वर का मन, मनुष्य की दशा, उद्धार का मार्ग, पापी लोगों का सर्वनाश होना, और विश्वासियों का प्रसन्न होना।

बाइबल की शिक्षा पवित्र है, इसके नियम हमारे ऊपर बंधे हुए हैं, इसका इतिहास सच्चा है, और इसके निर्णय बदलते नहीं हैं।

बुद्धि प्राप्त करने के लिए हम बाइबल को पढ़ें, सुरक्षित रहने के लिये बाइबल पर विश्वास रखें, और पवित्र रहने के लिये हम बाइबल की शिक्षाओं पर चलें।

बाइबल एक ज्योति के समान है जो हमारा मार्ग–दर्शन करती हैं, हमें आत्मिक भोजन देती हैं, और हमें खुश रहने के लिये परमेश्वर का चैन और आराम देती हैं।

बाइबल यात्रिओं के लिये एक नक्शा, तीर्थ यात्रिओं के लिये एक छड़ी, सिपाही के लिये एक तलवार, और मसीहियों के लिये एक लिखित दस्तावेज़ के समान हैं।

बाइबल हमें स्वर्ग और नरक के बारे में साफ़ तरीके से बताती हैं। यीशु मसीह बाइबल का महत्वपूर्ण विषय है। संसार में रहते हुए हमें किस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए, इसके बारे में हम बाइबल से शिक्षा प्राप्त करते हैं। बाइबल का मुख्य मकसद है, कि सब बातों में परमेश्वर की महिमा हो।

बाइबल की बातें हमारे मनों में, हमारे हृदयों में वास करनी चाहिए, और हमारे कदमों का मार्गदर्शन इसके द्वारा होना चाहिए।

बाइबल को हम धीरे से, हर रोज़, और पूरी प्रार्थनाओं के साथ पढ़ें।

बाइबल खज़ाने की एक खान है, आत्मा को स्वस्थ रखती है, और सुख और आंनद की एक नदी है।

बाइबल को लिखित रूप से इस जीवन में आपको दिया गया हैं। यह पुस्तक न्याय के दिन खोली जाएगी, और यह हमेशा वर्तमान रहेगी।

बाइबल में हम उच्च जिम्मेवारियों को देखते हैं। बाइबल यह वादा करती है कि जो प्राण देने तक परमेश्वर के प्रति विश्वासी बने रहेगें, उन्हें इनाम में जीवन का मुकुट प्राप्त होगा।

बाइबल उन सभी लोगों की निंदा करती हैं जो उसकी शिक्षा के साथ खिलवाड़ करते हैं। बाइबल को सच्चे मन से, ईमानदारी से पढ़िए। इसे पढ़ने से आपको सच्चा ज्ञान तथा शांति मिलेगी।

पाठ दो

यीशु - परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र

"यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के साम्हने दिखाएं, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (यूहन्ना 20:30, 31)।

बाइबल की पहिली किताब उत्पत्ति में हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने आरम्भ में पहले पुरुष (आदम) और पहली स्त्री (हव्वा) को अपने स्वरुप में बनाया, अर्थात् परमेश्वर ने अपने स्वरूप के अनुसार उन्हें उत्पन्न किया, और उनको अदन नाम की एक सुन्दर वाटिका में रखा। परमेश्वर ने उन्हें अपनी एक आज्ञा दी थी, और वह चाहता था कि उसकी उस आज्ञा का हमेशा पालन हो। परन्तु, हम देखते हैं कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंधन करना पाप कहलाता है। हम लोग आदम और हव्वा की तरह हैं, इस बात में कि हमने भी पाप किया है।

"क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23)। यह मृत्यु केवल शारीरिक मृत्यु नहीं है जिसका सामना प्रत्येक मनुष्य इस संसार में रहकर करता है। परन्तु, यह मृत्यु आत्मिक मृत्यु है, और एक ऐसी मृत्यु जो हमेशा की अनन्त मृत्यु है। शारीरिक मृत्यु में हम देखते हैं, कि मनुष्य अपने शरीर को छोड़कर उस से अलग हो जाता है। अर्थात् शारीरिक मौत में हम देखते हैं कि आत्मा देह से अलग हो जाती है। इसी प्रकार से हम देखते हैं कि आत्मिक मृत्यु भी है, जिससे मनुष्य परमेश्वर से हमेशा के लिये अलग होकर उससे दूर रहता है। अर्थात् आत्मिक मृत्यु परमेश्वर से एक अनन्त अलगाव है। 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु:

"अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रकट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के

सुसमाचार को नहीं मानते, उन से पलटा लेगा। वे प्रभु के साम्हने से, और उसकी शक्ति के तेज़ से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे।"

अनन्त दण्ड से बचने के लिये हमें आवश्यकता हैं कि हम परमेश्वर को जाने, और इस बात को सीखें कि किस तरह से हम सुसमाचार की आज्ञा को मान सकते हैं? बाइबल हमें परमेश्वर को प्रकट करती है, और बताती है कि किस तरह से हम अपने पापों से बचायें जा सकते हैं। मनुष्यों को पापों से मुक्ति या छुटकारा दिलाने के लिये परमेश्वर की योजना के बारे में हम सबसे पहले अदन की वाटिका में देखते हैं। उस समय जब परमेश्वर मनुष्य को उसकी पाप की सज़ा या दण्ड सुना रहा था, उसी समय परमेश्वर ने यह वादा भी किया था कि वो मनुष्य को उसके पापों से छुटकारा दिलाएगा। (उत्पत्ति 3:15)।

जब परमेश्वर ने इब्राहीम और उसकी वंशावलियों को यह कहकर चुना कि वे उसके ख़ास लोग हैं, तो परमेश्वर ने उससे यह वादा किया कि "पृथ्वी की सारी जातियां तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी" (उत्पत्ति 26:4 और 28:14)। यानि तेरे ही बीज़ में होकर यह सारी जातियां आशीषित की जाएंगी। यह बीज़ जो सारी जातियों को आशीषित करेगा वो यीशु मसीह है (गलतियों 3:16)। पुराने नियम के अनुसार यीशु ही केवल वो है जो इब्राहीम की वंशावलियों से इस संसार में आएगा। नए नियम में भी हम देखते हैं कि यीशु ही चर्चा का मुख्य विषय है।

यीशु मसीह अद्‌भुत है

2000 वर्ष पहले यीशु का जन्म हुआ था। इतिहास हमें बताता है कि यीशु ही केवल एक ऐसा इंसान था जो वास्तव में इस संसार में रहा। बाइबल हमें बताती हैं कि यीशु न केवल पूरी तरह से मनुष्य था पर वो पूरी तरह से ईश्वरीय भी था। यह समझना हमारे लिये थोड़ा सा कठिन हैं, परन्तु बाइबल हमें इसके बारे में समझाती हैं कि "आदि में वचन था, ओर वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था" (यूहन्ना 1:1)।

"और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना 1:14)।

शारीरिक दृष्टिकोण से यीशु इब्राहीम की वंशावली से था। परन्तु, वह परमेश्वरत्व के तीन व्यक्तित्वों में से एक व्यक्तित्व था। यीशु पृथ्वी पर आने से पहले, परमेश्वरत्व में, वचन के रूप में विधमान था। वह परमेश्वर से अलग होकर, एक मनुष्य बनकर, हमारे बीच में इस पृथ्वी पर रहा। परमेश्वर का वचन कहता है कि "क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है" (कुलुस्सियों 2:9)।

यीशु का एक संसारिक पिता है, और एक ईश्वरीय पिता है। एक स्वर्गदूत ने एक जवान स्त्री से जो यीशु की मां बनेगी, यह कहा था:

"और देख तू गर्भवती होगी, और तेरा एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना" (लूका 1:31)।

"तब मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा" (लूका 1:34, 35)।

यीशु केवल आधा मनुष्य और आधा ईश्वरीय नहीं था। कभी कबार उसने अपने आप को "मनुष्य का पुत्र" कहकर भी सम्बोधित किया था जो कि उसके मनुष्यत्व को दर्शाता है, और कभी कबार उसने अपने आप को "परमेश्वर का पुत्र" कहकर भी सम्बोधित किया था जोकि उसके ईश्वरत्व को दर्शाता है। बाइबल में यह पदबंध "का पुत्र" का अर्थ यह है, कि जिसमें एक माता-पिता की सारी विशेषताएं पाई जाती हैं। इसी कारण हम देखते हैं कि एक ही समय पर वह पूरी तरह से मनुष्य और पूरी तरह से ईश्वरीय था। बाइबल हमें बताती हैं कि किस तरह की नम्रता यीशु ने दिखाई जब वह इस पृथ्वी पर एक मनुष्य की तरह रहा था।

“जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली” (फिलिप्पियों 2:5-8)।

यीशु मसीह अनंत है

एक बार यीशु ने यहूदियों को बोला था, “कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं” (यूहन्ना 8:58)। यद्यपि इब्राहीम, यीशु के मनुष्य के रूप में जन्म लेने से पहले इस पृथ्वी पर 2000 वर्षो तक रहा, तौभी हम देखते हैं कि वास्तव में यीशु का अस्तित्व इससे काफ़ी दूर हैं। यीशु ने जिन शब्दों का चुनाव या इस्तेमाल किया था जैसे, “मैं हूं” इस बात को दर्शाता है कि वह अनंत है। यीशु को इस पृथ्वी पर पिता ने भेजा था (यूहन्ना 5:23)। यीशु स्वर्ग से आया था (यूहन्ना 6:38), और एक दिन वापस स्वर्ग में लौट गया (यूहन्ना 13:3)। यीशु ने स्पष्ट रूप से इस बात को सामने रखा कि वह परमेश्वर के बराबर है (यूहन्ना 5:17, 18); इसलिये यहूदियों की यह इच्छा थीं कि वे उसे मार डालें।

यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता है

हम देखते हैं कि यीशु नाम का अर्थ है “उद्धारकर्त्ता”। यीशु की मां मरियम को स्वर्गदूत से यह आदेश दिया गया था कि वह उसका नाम यीशु रखे (लूका 1:31)। क्यों? मत्ती 1:21 के अनुसार बाइबल हमें बताती हैं कि “वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।”

इसी ख़ास उद्देश्य अर्थात् मकसद के लिये वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था। परन्तु, क्योंकि वह दूसरे मनुष्यों की तरह इस पृथ्वी पर दिखता था, यीशु को यह दर्शाना पड़ा कि वह परमेश्वर का पुत्र है जो लोगों को

उनके पापों से बचा सकता है। यीशु ने अपनी पहचान को इस बात से प्रमाणित किया, कि उसने कई चमत्कारों, चिन्हों, और आश्चर्य के कामों को किया जब वह इस पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में था। (पाठ के आरम्भ में जो पद देखा था, उसे दोबारा से पढ़िए)

यीशु ने एक ऐसे मनुष्य को चंगा किया जो अड़तीस वर्षो से चल-फिर नहीं सकता था (यूहन्ना 5:5-9)। उसने पांच रोटी और दो मछलियों के द्वारा 5000 लोगों को खाना खिलाया (यूहन्ना 6:9-14)। एक मनुष्य जो जन्म से अन्धा था, यीशु ने उसकी मदद की, ताकि वो दोबारा से देख सके (यूहन्ना 9:1-7)। यीशु ने लाज़र को मुरदों में से जी उठाया (यूहन्ना 11:38-44)। यीशु ने बहुत सारे आश्चर्यकर्म करे थे जब वह इस पृथ्वी पर था। उन्हीं आश्चर्यकर्मों में से यह कुछ आश्चर्यकर्म हैं जिसके बारे में अभी हमने देखा। इन आश्चर्यकर्मों का परिणाम हम परमेश्वर के वचन में कई पदों में देखते हैं

> "बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया (यूहन्ना 2:23)।
>
> "और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बिमारों पर दिखाता था वे उनको देखते थे (यूहन्ना 6:2)।
>
> "हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आया है, क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता" (यूहन्ना 3:2)।

जब यीशु ने लाज़र को मुरदों में से जी उठाया, तो बहुत से यहूदियों ने उसमें विश्वास किया, परन्तु महायाजकों की टोली यीशु से ईर्ष्या रखते थें, और उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह यीशु को मरवा डालेंगे (यूहन्ना 12:9-11), और हम देखते हैं कि वास्तव में वे यीशु को मरवा डालने में कामयाब रहें। संसार के आरंभ से पहले ही परमेश्वर की ऐसी योजना थी, कि यीशु मसीह एक बलिदान की तरह जगत के सारे पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस पर मारा जाए। यीशु एक योग्य व्यक्ति था जो हमारे

बदले क्रूस पर मारा गया क्योंकि वह पापरहित था। परन्तु, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने उसे मुरदों में से जी उठाया। इन तथ्यों का प्रचार पहिले सुसमाचार के प्रवचन में प्रेरित पतरस द्वारा पिन्तेकुस्त के दिन किया गया था।

> “हे इस्त्राएलियों, ये बातें सुनोः कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी यीशु को, जो परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला” (प्रेरितों 2:22, 23)।

> “इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिस के हम सब गवाह हैं” (प्रेरितों 2:32)।

> “सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी” (प्रेरितों 2:36)।

यीशु ने यह होने दिया कि पापी लोग उसे क्रूस पर चढ़ाएं, क्योंकि इसी के ज़रिए उसका पापरहित लहू हमारे पापों के लिए क्रूस पर बहाया गया।

किस तरह से हम अपने पापों की क्षमा प्राप्त कर सकते हैं, यह हमारे अगले दो पाठों का चर्चा का विषय रहेगा।

पाठ दो के प्रश्न

खाली स्थानों को सही उत्तरों से भरिए।

1. पहले आदमी का नाम............................., और पहली स्त्री का नाम................................ था। परमेश्वर ने उन्हें .... की वाटिका में रखा था।
2. परमेश्वर की व्यवस्था या नियम तोड़ना .... कहलाता है, परन्तु इस समस्या का समाधान है।
3. हमें परमेश्वर को .... की आवश्यकता हैं, और इस बात को सीखने की, कि किस प्रकार से हम सुसमाचार की .... को .... सकते हैं।
4. यह पदबंध, "परमेश्वर का पुत्र" यीशु के .... को दर्शाता है, और यह पदबंध "मनुष्य का पुत्र" उसके .... को दर्शाता है।
5. "यीशु" नाम का अर्थ है ".."।
6. यीशु ने .... और .... से जो की उसने इस पृथ्वी पर रहकर किए, इस बात को प्रमाणित किया कि वह परमेश्वर का पुत्र है।
7. यीशु ने .... नाम के आदमी को मुरदों में से जी उठाया।
8. महायाजकों की यह इच्छा थी कि वह .... को मरवा ड़ालें, क्योंकि उनको इस बात से .... थी कि यीशु के पीछे बहुत से लोग चल रहें हैं।
9. परमेश्वर ने यीशु को .... में से जी उठाया। अब वो दोनों .... और .... हैं।
10. यीशु का पापरहित .... हमारे .... के लिये बहाया गया था।
11. अनंत दण्ड से बचने के लिये हमें आवश्यकता हैं कि हम परमेश्वर को ...., और इस बात को सीखें कि किस

तरह से हम सुसमाचार की .... को मान सकते हैं।

12. मनुष्यों को उसके पापों से छुटकारा दिलाने के लिये परमेश्वर की .... की योजना के बारे में सबसे पहले हम .... की वाटिका में देखते हैं।

निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत लिखें।

1. .... पाप की सज़ा मृत्यु है, यानि परमेश्वर से अनंत के लिये अलग होना।
2. .... यीशु मसीह नए नियम का ख़ास विषय है।
3. .... यीशु मसीह अनंत नहीं है।
4. .... यीशु आधा परमेश्वर और आधा मनुष्य था।
5. .... यीशु ने एक कुवांरी से जन्म लिया जिसका नाम मरियम था।
6. .... यीशु पिता के बराबर था।
7. .... यीशु ने एक बार 5000 लोगों का पांच रोटी और दो मछलियों के साथ खाना खिलाया।
8. .... यीशु ने कभी पाप नहीं किया।
9. .... जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, यह परमेश्वर की योजना का एक हिस्सा था, ताकि मनुष्य को उसके पापों से उद्धार दिलाया जा सकें।
10. .... यीशु ने जो पृथ्वी पर रहकर आश्चर्यक्रम किए थें, यह इस बात को प्रमाणित करता है कि वह परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र है।
11. .... यीशु यदि क्रुस पर नहीं मरता तौभी मनुष्य उद्धार को प्राप्त कर सकता है।
12. .... एक बार यीशु ने यहूदियों को बोला था “कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं।”

पाठ तीन

पाप की समस्या

क्या आपने कभी ऐसे कार्य को करने का चुनाव किया है जो आप जानते थें कि गलत हैं? बाइबल इन सभी गलत गतिविधियों या कार्यों को पाप कहती हैं। साधारण अर्थ में पाप का मतलब यह है, कि जब परमेश्वर हमें कोई आज्ञा या नियम पालन करने को देता हैं, और हम उस आज्ञा या नियम का उल्लंघन करते हैं, तो हम अपने आपको व्यवस्था के विरोध में पाते हैं, अर्थात् हम व्यवस्था विरोधी मनुष्य बन जाते हैं।

> "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यव्स्था का विरोध हैं" (1 यूहन्ना 3:4)।

दूसरे शब्दों में, बाइबल हमें सिखाती हैं कि कुछ बातें या कार्य गलत हैं जैसे, चोरी करना। चोरों की गिनती अन्यायी लोगों के बीच में की जाती हैं जो परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। (1 कुरिन्थियों 6:9, 10)। प्रेरित पौलुस ने साफ़ तौर से कहा था "चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे" (इफिसियों 4:28)। चोरी करना गलत है; अगर हम चोरी करते हैं तो हम परमेश्वर की आज्ञा या उसके नियम का उल्लंघन करते हैं जिसका मतलब है कि हमने पाप किया है।

सच्चाई को न मानना या उसको अस्वीकार करना भी पाप कहलाता है क्योंकि बाइबल परमेश्वर का वचन सत्य है। नए नियम की एक किताब जो पाप के विषय में चर्चा करती है वो है रोमियों की किताब। इसका मतलब यह नहीं कि मनुष्य ने कभी भी सत्य को नहीं जाना, परन्तु हम देखते हैं कि मनुष्य ने हमेशा सत्य से अपना मुंह फेरा और उसका तिरसकार किया है (रोमियों 1:18-20)। अगली कुछ आयतों में हम देखेंगे कि मनुष्य-जाति ने परमेश्वर और उसके वचन के साथ कैसा बरताव किया था।

"इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि

उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला। इसी कारण परमेश्वर ने उन्हें उनकी मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना ओर सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन" (रोमियों 1:21-25)।

परमेश्वर चाहता है कि सारे जगत के लोग सत्य को जानें; इसी कारण उसने हमें अपना वचन दिया हैं। यानि परमेश्वर ने अपना पवित्रशास्त्र बाइबल हमारे हाथों में दी है। लेकिन यदि हम उसके वचन का तिरस्कार या उसे अस्वीकार करेंगे, तो परमेश्वर ऐसा होने देगा कि हम मूर्ख बन जाएं। परमेश्वर ऐसा होने देगा कि जो बातें गलत हैं या सच नहीं हैं, उन बातों से हमारी आंखें अन्धी हो जाएं ताकि हम सत्य को नहीं पहचान पाएं, और यहां तक कि हम हमेशा के लिये अपने पाप में खो जाएं (2 कुरिन्थियों 4:3,4)। परमेश्वर ऐसा होने देगा कि हम झूठी शिक्षाओं से धोखा खाएं। कई लोग पहले ही नाश हो गए हैं, "क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया" (2 थिस्सलुनीकियों 2:10)।

इन सारी बातों से उपर हटकर, क्या आप सच्चाई से प्रेम करते हैं?

सबने पाप किया हैं

जब परमेश्वर ने इब्राहीम और उसकी वंशावलियों को अपने ख़ास लोग बनने के लिये चुना था, तब हम देखते हैं कि संसार में लोग दो वर्गों में बट गए थें। इब्राहीम के बच्चे जो बाद में यहूदी कहलाए गए। यह पहला वर्ग हैं। दूसरा वर्ग अन्यजाति का था, जिसमें संसार के हर एक राष्ट्र से लोग थे। रोमियों की किताब में प्रेरित पौलुस इस बात को दिखाता है कि दोनों यहूदी और अन्यजाति पाप के दोषी थे। अर्थात् दोनों की पाप में हिस्सेदारी थीं। अन्यजातियों ने सच्चाई को मानने से इंकार किया, और वह मूरतों की

उपासना करने वाले लोग बन गए। हम देखते हैं कि यहूदियों को परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था दी गई थी, लेकिन उन्होंने कभी भी उसकी व्यवस्था का पूरी तरह से पालन नहीं किया। जब कभी यहूदियों को मौका मिला, उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया। इसलिये हम देखते हैं कि सबने पाप किया था चाहे यहूदी हो या अन्यजाति हो।

> "जैसा लिखा है कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं" (रोमियों 3:10)। "इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)।

क्या आपने पाप किया है? हां, आपने पाप किया है। ऊपर की आयतें इस बात को बड़े ही साफ़ तौर से बताती हैं कि हम में से हर एक व्यक्ति पाप करने को चुनता हैं।

लेकिन, आप सोचते होंगे कि "पाप किस तरह के होते हैं?" वास्तव में कई प्रकार के पाप होते हैं। कुछ पापों की सूची हम बाइबल की इन पत्रीयों में पाते हैं जैसे, (रोमियों 1:29-32; 1 कुरिन्थियों 5:11 और 6:9, 10; गलतियों 5:19-21; इफिसियों 4:26-32; 2 तीमुथियुस 3:1-5; और प्रकाशितवाक्य 21:8)। नीचे कुछ पापों का विभाजन दिया गया हैं।

कुछ पाप ऐसे हैं जो शरीर के काम कहलाते हैं। यह उन गैरकानूनी रास्तों की और संकेत करते हैं जिनके इस्तेमाल से शरीर की अभिलाषाओं या इच्छाओं की पूर्ति हो सकती हैं। शरीर के काम इस प्रकार से हैं: जैसे, अनैतिक यौन संबन्ध (अपने पति या पत्नी के अलावा किसी और के साथ संबंध होना), व्यभिचार, तलाक- जो बाइबल के अनुसार नहीं है, समलैंगिक होना, पियक्कड़, रंगरलियां मनाना, इत्यादि। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग पवित्र और शुद्ध रहें।

> "पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, ''पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं" (1 पतरस 1:15, 16)।

"हे प्रियों, मैं तुम से विनती करता हूं कि तुम अपने आप को परदेशी

और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो" (1 पतरस 2:11)।

कुछ पाप ऐसे हैं जो मनुष्य के व्यवहार पर आधारित हैं जैसे, घमंड, ईर्ष्या, लालच, लोभ, क्रोध, विरोध, दूसरे को हानि पहुंचाने की अभिलाषा, धन्यवादी न होना, माफ करने को तैयार न होना, इत्यादि। इनमें से कुछ पाप जीभ के सहारे दर्शाए जाते हैं जिसके बारे में हमें चेतावनी दी गई है कि हम अपनी जीभ को काबू में रखें (याकूब तीसरा अध्याय)।

"अत: हे प्रियो, जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमे मिली हैं, तो आओं, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें" (2 कुरिन्थियों 7:1)।

हमें न केवल उन कार्यों को करना चाहिए जो कि गलत हैं, परन्तु हमें उन कार्यों को करना चाहिए जो कि सही और अच्छें हैं।

"इसलिये जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है" (याकूब 4:17)।

पाप की मज़दूरी

जब हम पाप करने का चुनाव करते हैं, तब क्या होता है? हम परमेश्वर से अपनी सहभागिता को खो देते हैं। आरंभ में आदम और हव्वा ने जब पाप किया तो वह परमेश्वर की सहभागिता से दूर हो गए। अर्थात् परमेश्वर के साथ उनकी जो ख़ास सहभागिता थी, उसे उन्होंने खो दिया था (उत्पत्ति 3)। पुराने नियम के नबी यशायाह ने इस्राएलों से बोला था कि कितने गंभीर उनके पाप हैं।

"सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके; परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता" (यशायाह 59:1, 2)।

क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, इसलिये न वह पाप को सहमति दे सकता है, और न वह पाप के साथ सहभागिता रख सकता है। "पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23)।

जब हम मरते हैं तो हमारा क्या होगा यदि हम पाप के दोषी हैं? हम अनंतकाल तक के लिये अपने पाप में खो जाऐंगे। अर्थात् अनंतकाल तक के लिये हम परमेश्वर से दूर हो जाऐंगे। एक दिन आ रहा है जब "प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते, उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे" (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

हम में से हर एक ने पाप किया हैं। हम सब ने परमेश्वर के साथ अपनी सहभागिता को खो दिया हैं। हम सब आत्मिक मृत्यु के योग्य हैं। यह मृत्यु हमेशा की अनन्त मृत्यु है, और इस मृत्यु का अर्थ है परमेश्वर और उसकी सारी अच्छी आशीषों से अलग और दूर होकर हमेशा के लिये एक ऐसी जगह ज़िन्दा रहना, जिसके बारे में बाइबल कहती है कि वह आग और गन्धक की एक विशाल झील है, और वहां रोना ओर दातों का पीसना होगा। अपने पापों के कारण हमने यह दण्ड कमाया हैं। निश्चित रूप से हम हमेशा के लिये पीड़ा या कष्ट को नहीं सहना चाहते, किन्तु अपने पापों के कारण हम इस हमेशा की पीड़ा और कष्ट के योग्य हैं।

परन्तु, परमेश्वर जो सबसे पवित्र है, और जिसे हमने अपने पापों से नाराज़ किया है, वह नहीं चाहता कि हम हमेशा के लिये उसके सामने से दूर हो जाएं। क्योंकि परमशेवर पवित्र और उचित न्यायाधीश है, उसे पाप को दण्डित करना ही पड़ेगा। मनुष्य को उसके पापों का दण्ड दिये बिना वह मनुष्य के साथ अपना मेल नहीं कर सकता। परमेश्वर ने यह निश्चय किया, कि एक रास्ता है जिसके द्वारा वह हमें हमारे पापों से बचा सकता हैं। परमेश्वर ने ऐसा होने दिया कि यीशु हमारे स्थान पर, हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये, क्रूस पर मारा जाए, और हमारे पापों के दण्ड को सहे।

"परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं. .... उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया, तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिये विनती करता है" (यशायाह 53:5, 12)।

हां, "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23)। क्योंकि यीशु परमेश्वरत्व में एक हिस्सा है, हम समझ सकते हैं कि पौलुस का रोमियों 3:26 में क्या मतलब था जब उसने कहा था, कि परमेश्वर हर एक उस जन को उचित और सिद्ध ठहराता है जो यीशु में विश्वास रखते हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9 को दोबारा से पढ़िए। क्या आप परमेश्वर को जानते है? क्या आपने सुसमाचार को माना है? यदि नहीं, तो आप अपने पापों में अभी भी खोएं हुए है। अगला पाठ आपको इस बात से भलिभांति परीचित कराएगा कि किस तरह से आप यीशु के द्वारा बचाये जा सकते हैं?

पाठ तीन के प्रश्न

खाली स्थानों को सही उत्तरों से भरिए।

1. परमेश्वर की आज्ञा को ना मानना या उसकी आज्ञा को मानने से इंकार करना .... कहलाता है।

2. मनुष्यों ने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर .... बना डाला।

3. उद्धार पाने के लिये या अपने पापों से बचने के लिए .... के प्रेम को ग्रहण करना आवश्यक है।

4. दो वर्गों के लोग जो संसार में हैं, वे हैं .... और .... ।

5. व्यभिचार, समलैंगिकता, और पियक्कड़पन .... के पाप हैं।

6. घमंड, ईर्ष्या, और घृणा .... के पाप हैं।

7. जो कोई .... करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है।

8. पाप की मज़दूरी तो .... है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में .... है।

9. जब यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ स्वर्ग से प्रगट होगा, वह उन सब से पलटा लेगा जो उसको नहीं .... और उसके .... को नहीं मानते।

10. परमेश्वर ने ऐसा होने दिया कि .... हमारे स्थान पर हमारे पापों के .... के लिये क्रूस पर मारा जाए, और हमारे पापों के .... को सहें ।

11. परमेश्वर एक .... है, इसलिए उसने पाप की सज़ा ठहराई है, किन्तु वह हमारा .... परमेश्वर भी है क्योंकि वह हमें हमारे पापों से बचाने के लिये उद्धार का एक रास्ता या मार्ग देता हैं, वो मार्ग यीशु मसीह है।

12. क्योंकि यीशु .... में एक हिस्सा है, हम समझ सकते हैं कि पौलुस का रोमियों 3:26 में क्या मतलब था जब उसने कहा था कि परमेश्वर हर एक उस जन को उचित और सिद्ध ठहराता है जो यीशु में .... रखते हैं।

निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत लिखें।

1. .... चोरी करना पाप है।
2. .... सच्चाई को नहीं मानना पाप है।
3. .... सत्य को न माननेवाले लोगों के साथ परमेश्वर ऐसा होने देता है कि जो बातें झूठी हैं या सच नहीं हैं, उन बातों से लोगों की आंखें अन्धी हो जाएं, और अनन्तकाल तक के लिए वे अपने पापों में खो जाएं।
4. .... बहुतेरे, परन्तु सारे मनुष्य नहीं, पाप के अपराधी हैं
5. .... हमारे पाप करने से परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता पर असर नहीं पड़ता।
6. .... क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, इसलिये वह पाप को तो सही नहीं ठहरा सकता, और न ही परमेश्वर पाप के साथ सहभागिता रख सकता है।
7. .... अपने पापों के कारण हर एक मनुष्य अनन्तकाल तक के लिये पीड़ा पाने के लिये है।
8. .... परमेश्वर चाहता है कि हर एक मनुष्य अनंतकाल तक के लिये पीड़ा को सहें।
9. .... यह ज़रुरी नहीं है कि परमशेवर पापी को दण्ड दे।
10. .... अन्यजातियों ने सच्चाई को मानने से इंकार किया, और वे अविश्वासी बन गए।

पाठ चार
पाप से मुक्ति

हम सब ने पाप किया हैं (रोमियों 3:23), और हम सब मृत्यु पाने के योग्य हैं (रोमियों 6:23)। "परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है"। इस बात पर कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर अनुग्रह से भरा हुआ है, इसी कारण परमेश्वर हर एक राष्ट्र के हर एक जन को उद्धार देता हैं। "क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है" (तीतुस 2:11)। इसके बावजूद की हम विद्रोही और पापी थे, परमेश्वर ने अपने महान प्रेम को इस प्रकार से प्रगट किया, कि उसने हमें यह अवसर दिया ताकि हम अपने पापों से बचाए जा सकें। "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि हम जब पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों 5:8)।

किस तरह से परमेश्वर हमें हमारे पापों से बचाता हैं? परमेश्वर ने हमें इस तरह से बचाया कि उसने ऐसा होने दिया कि यीशु हमारे पापों का दाम चुकाए। क्योंकि हम सब ने पाप किया हैं, इसलिये हम एक दूसरे का स्थान नहीं ले सकते हैं। केवल वही जो पाप के बिना है, हमारे पापों के दण्ड को ले सकता हैं। यीशु के विषय में लिखा है "न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली" (1 पतरस 2:22)। इसलिये यीशु हमारा स्थान लेने के योग्य था।

हमें हमारे पापों से बचाने के लिये जो दाम परमेश्वर चाहता था वह था बेगुनाह यानि निष्पाप बलिदान का लहू। "बिना लहू बहाए क्षमा नहीं होती" (इब्रानियों 9:22)। यद्यपि यीशु ने कोई पाप नहीं किया था, तौभी हम इस बात को देखते हैं कि दुष्ट और पापी मनुष्यों ने उसे लकड़ी के बनाए हुए क्रूस पर कीलों से लटका दिया। यीशु कई घण्टों तक क्रूस पर लटका रहा, और उसने उन सारी तकलीफ़ों और पीड़ाओं को हमारे लिये क्रूस पर सहा। जब यीशु की क्रूस पर मृत्यु हो गई, तक एक सिपाही ने बरछे या भाले से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला (यूहन्ना

19:34) यह लोहू हमारे पापों की क्षमा के लिये क्रूस पर बहाया गया था (इब्रानियों 9:12)। इस लोहू के द्वारा यीशु हमारे पापों को धो देता हैं (प्रकाशितवाक्य 1:5)। यीशु के बेशक़ीमती लोहू के अलावा कोई भी चीज़ ना तो हमें हमारे पापों से साफ़ कर सकती हैं, और ना ही हमारे पापों को धो सकती हैं।

यदि हमारे पापों को यीशु के लोहू से नहीं धोया गया, तब हम इस प्रकार से दण्ड पाएंगे कि हम परमेश्वर और उसकी सभी अच्छाईयों से हमेशा तक के लिये वंचित हो जाएं (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

जब यीशु ने क्रूस पर रहकर हर एक मनुष्य के लिये आत्मिक मृत्यु के स्वाद को चख़ा, तब वह अपने स्वर्गीय पिता से अलग हो गया था (इब्रानियों 2:9)। अपने पिता से अलग होने का दर्द यीशु के लिये इतना बुरा और भारी था, कि वह अपने आप को रोक न सका और बड़े शब्द से पुकारकार कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी, अर्थात् हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? (मत्ती 27:46)।

इससे और कितना अधिक प्रेम यीशु हमें दिखा सकता हैं, इस बात की तुलना में कि वह हमारे पापों के लिये दोषी ठहराया गया, और फिर अपने लोहू से हमारे पापों को धो डाला? लेकिन एक प्रश्न जो हमेशा हमारे मनों में रहता हैं वो यह है कि "किस तरह से हम अपने पापों को मिटा सकते या साफ़ कर सकते हैं, और किस तरह से आप अनंत जीवन के मुकुट को प्राप्त कर सकते हैं?"

उद्धार में मनुष्य की क्या भूमिका है?

हालांकि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से सब को उपलब्ध हैं, फिर भी यह ज़रुरी है कि मनुष्य परमेश्वर की उद्धार की बुलाहट का उत्तर दे। अर्थात् मनुष्य को अपने पापों से उद्धार पाने के लिये परमेश्वर की उद्धार की आज्ञा को मानना आवश्यक है। यदि मनुष्य ऐसा नहीं करता है, तो चाहे वह कितने ही अच्छे काम परमेश्वर के लिये करे, और चाहे कितना अच्छा जीवन या व्यवहार उसका हो, वह अपने पापों से उद्धार नहीं पा सकता।

यीशु हम सब के पापों के लिये मारा गया। अर्थात् यीशु ने संसार के हर एक मनुष्य के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस पर अपनी जान दी (1 यूहन्ना 1:2)। परन्तु, बहुतेरे लोग नहीं बच पाऐंगे क्योंकि वह परमेश्वर की उद्धार की शर्तों को मानने से इंकार कर देंगे। उद्धार पाने के लिये हमें ज़रूरत हैं कि हम परमेश्वर की उद्धार की शर्तों को माने जिसके बारे में अब हम आगे चर्चा करेंगे।

सबसे पहिले, हमें यह विश्वास करने और जानने की आवश्यकता हैं कि परमेश्वर है, और वह हमारे बीच में विद्यमान है।

> "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है" (इब्रानियों 11:6)।

हमें यह भी विश्वास करना चाहिए, कि यीशु परमेश्वर का एकलौता पुत्र है जिसे परमेश्वर ने इस संसार में भेजा, ताकि वह हमें हमारे पापों से छुटकारा दिला सके।

> "इसलिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं तो अपने पापों में मरोगे" (यूहन्ना 8:24)। [पाठ 2 में हमने यीशु की पहचान के बारे में देखा था]।

दूसरा कदम यह है, कि हमें अपने पापों से मन फिराना चाहिए। यीशु ने बड़ी ही स्पष्टता से कहा था कि "यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे" (लूका 13:3)।

"पश्चाताप" शब्द का क्या अर्थ है? इस शब्द की परिभाषा के कई हिस्से हैं। परन्तु, शुरु करने से पहिले हमें यह जानने की आवश्यकता हैं कि पाप क्या है [पाप के विषय में पाठ 3 में देखिए]। अगली बात जिसे हमें जानने की बड़ी आवश्यकता हैं वो है कि पाप के कारण हमारे साथ क्या होता है? पाप हमें परमेश्वर की सहभागिता से दूर या अलग कर देता हैं, और हमें अनंतकाल के दण्ड के योग्य बना देता है। पाप ही के कारण बेगुनाह यीशु को क्रूस पर मरना पड़ा। हमारे पापों की क्षमा के लिये यीशु को अपना बेशक़ीमती लोहू क्रूस पर बहाना पड़ा।

इन सच्चाईयों पर सोचना और इन पर मनन करना इस बात को बताता है, कि हम उन ग़लत कामों पर दुख महसूस करते हैं जो हमने अपने जीवन में करे हैं। इस तरह का दुख किसी भी तरह से पश्चाताप नहीं है, परन्तु यह पश्चाताप को उत्पन्न कर सकता है।

> "क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिस का परिणाम उद्धार है और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता: परन्तु सांसारिक शोक मृत्यु उत्पन्न करता है" (2 कुरिन्थियों 7:10)।

यदि हम अपने पापों पर सचमुच में शोक प्रगट करेंगे तो यह हमारी सोच को और हमारी गतिविधियों को बदलने में सहायक होगी। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला जिस ने यीशु का मार्ग तैयार किया था, उसने लोगों से कहा था, "सो मन फिराव के योग्य फल लाओ" (लूका 3:8)। दूसरे शब्दों में, जिस तरह से हम अपने जीवन को इस पृथ्वी पर जीते हैं, उसमें बदलाव लाने की आवश्यकता है। पश्चाताप करना या मन-फिराना एक ऐसा फैसला करना है, कि चाहे जो भी बुराई है, मैं उससे हमेशा के लिये मुंह मोड़ लूंगा, और मैं प्रभु के वचन को मानूंगा, तथा जीवन में धार्मिक रूप से सब कुछ सही करूंगा।

> "इसलिये परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है" (प्रेरितों 17:30, 31)।

> "क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम, और धर्म, और भक्ति से जीवन बिताएं" (तीतुस 2:11,12)।

जिस तरह से हम अपने जीवन को इस पृथ्वी पर व्यतीत कर रहे हैं, अगर हम इस जीवन को परमेश्वर के अनुसार बदलने को तैयार हैं (यानि परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना न की अपनी इच्छा को) तब हमें इस बात को मनुष्यों के सामने अंगीकार करने के लिये तैयार रहना चाहिए कि यीशु परमेश्वर का

पुत्र है (मत्ती 10:32, 33; प्रेरितों 8:37; 1 तीमुथियुस 6:12)।

नीचे दिए गए वाक्यांश में हम विश्वास और यीशु का अंगीकार करने को साथ-साथ पाते हैं

> "कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है" (रोमियों 10:9, 10)।

अन्तिम कदम जिससे हम अपने पापों से छुटकारा पा सकते हैं, और जिससे हम प्रभु में मिला दिये जाते हैं, वो है अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना। मरकुस 16:16 में हम विश्वास और बपतिस्मे को साथ-साथ पाते हैं जिस में यीशु ने कहा था, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा"। अर्थात् विश्वास + बपतिस्मा = उद्धार।

इस बात पर ध्यान दें कि उद्धार तभी संभव है जब मनुष्य विश्वास के साथ-साथ बपतिस्मा भी लेता है। इस आज्ञा को मानना या उस आज्ञा को मानना, यह चर्चा का विषय नहीं है। अपने पापों से छुटकारा पाने के लिये हमें दोनों आज्ञाओं को मानना आवश्यक हैं।

नए नियम के प्रेरितों के काम नामक पुस्तक में हम ऐसे उदाहरणों को पढ़ते हैं जो यह दिखाते हैं, कि किस तरह से लोग अपने पापों से बचाये गए जैसे-जैसे परमेश्वर का सुसमाचार पूरे संसार मे फैलता गया। हम देखते हैं कि सबसे पहले सुसमाचार का पाठ पिन्तेकुस्त के दिन पतरस द्वारा प्रचार किया गया था, अर्थात् यीशु के स्वर्ग में वापस चले जाने के पश्चात (प्रेरितों 1:9-11), और जब पवित्र आत्मा यीशु के बारह प्रेरितों पर पिन्तेकुस्त के दिन उतरा था (प्रेरितों 2:1-4)।

पतरस द्वारा सुसमाचार के पाठ को सुनकर बहुतेरे लोग इस तरह से कायल हो गए थें कि उन्होंने माना कि वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के दोषी हैं, और फिर वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, "हे भाईयों, हम क्या

करें?" अर्थात् अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लियें हमें क्या करने की आवश्यकता है? (प्रेरितों 2:36, 37)।

> "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे" (प्रेरितों 2:38)।

> "अत: जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए" (प्रेरितों 2:41)

यह लोग पतरस के प्रचार से कायल हो गए थे कि यीशु ही मसीह है, और परमेश्वर का पुत्र है। क्योंकि उन्होंने इस तथ्य पर विश्वास किया था, और क्योंकि वे जानना चाहते थें, कि उन्हें उद्धार पाने के लिये और क्या करने की आवश्यकता है? पतरस ने उन्हें पश्चाताप करने, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेने को कहा था।

पाप की समस्या का हल आज भी वही है। यदि कोई चाहता है कि उसे अपने पापों की क्षमा प्राप्त हो तो उसे ज़रुरत है कि वह पश्चाताप करे, अर्थात् अपने सारे पापों से मन फिराये और माफ़ी पाने (क्षमा) के लिये बपतिस्मा ले।

इस बात को जानना हमारे लिए बड़ा आवश्यक हैं कि पानी से हमारे पाप साफ़ नहीं होते। यीशु हमारे पापों को अपने लोहू से धो देता हैं (प्रकाशितवाक्य 1:5)। जब हम बपतिस्मा लेते हैं तब यीशु हमारे पापों को धो देता हैं (प्रेरितों 22:16)। क्यों यीशु हमारे पापों को धोने के लिये हमारे बपतिस्मा लेने तक इंतजार करता है? इस सवाल का जवाब हम अपने पांचवे पाठ में काफ़ी सफ़ाई से देख सकते है। परन्तु, बपतिस्मा लेने का एक कारण यह भी है, कि वह परमेश्वर की तरफ से हमारे उद्धार पाने के लिये एक आज्ञा है। क्या आप इस आज्ञा को अपनी इच्छा के अनुसार मानने को तैयार हैं?

> "उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हे बचाता है; (इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)" (1 पतरस 3:21)।

क्या आपका बपतिस्मा बाइबल की शिक्षा के अनुसार हुआ है?

इस बात पर ध्यान दें कि हम यह नही पूछ रहें यदि आपका छिड़काव छोटे बच्चे की तरह हुआ है। कई लोगों पर पानी का छिड़काव किया गया था जब वे केवल छोटे बच्चे थें, परन्तु छिड़काव बाइबल के अनुसार बपतिस्मा नहीं है। बपतिस्में के बदले छिड़काव की शुरुआत तीसरी शताब्दी में ही की गई थी, और यह इंसानी रीति-रिवाजों पर आधारित है (मत्ती 15:9)। पहला मनुष्य जिस ने पानी में डुबकी के बदले छिड़काव से बपतिस्मा लिया उसका नाम नोवेशन था, और यह घटना 250 ईसवी सन में हुई थी।

हम जो पूछ रहे हैं वो यह है कि क्या आपने उस बपतिस्मे को लिया है जिसके बारे में यीशु ने बाइबल में आज्ञा दी है? क्या आपने सही प्रकार से बपतिस्मे को लिया है जिस के बारे में हम नए नियम में पढ़ते हैं (रोमियों 6:3,4)?

दूसरी बात जो आपको जानने की आवश्यकता है वो यह है कि, क्या आपका बपतिस्मा सही कारणों के लिये हुआ है? कुछ साम्प्रदायिक कलीसियाओं में बहुतेरे लोग पानी के अन्दर गाड़े गए हैं अर्थात् उन्होंने पानी में डुबकी तो लगाई है, परन्तु उनका पानी में गाड़े जाना या डुबकी लगाना गलत उद्देश्यों के लिये था। कुछ लोग कहते हैं कि बपतिस्मा भीतरी अनुग्रह का केवल एक बाहरी चिन्ह है। जो लोग इस तरह की शिक्षा पर

विश्वास रखते हैं, और ऐसी शिक्षा को बढ़ावा देते हैं, वह इस बात का दावा करते हैं कि उन्होंने बपतिस्मा इसलिये लिया हैं क्योंकि वह पहले से ही उद्धार पाए हुए थे। इस तरह की शिक्षा यीशु मसीह और उसके बारह प्रेरितों की सीधी और सरल शिक्षाओं के विरोध में हैं (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; गलतियों 3:27)। प्रेरितों ने कभी भी यह शिक्षा नहीं दी थी कि उद्धार पाने के पश्चात बपतिस्मा लिया जाता है।

यदि आप उस बात को या उस कार्य को करना चाहते है जो की सही है, और बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लेना चाहते हैं, तो हमें इस बात से खुशी होगी यदि हम किसी भी तरह से आपकी सहायता कर सकते हैं।

अधिक जानकारी और मसीह के सुसमाचार को मानने में सहायता लेने के लिये, आप हमें हमारे पते पर पत्र लिख सकते हैं।

पाठ चार के प्रश्न

खाली स्थानों को सही उत्तरों से भरिए।

1. यीशु ने कोई .... नहीं किया।

2. यीशु ने हमारे पापों के लिये अपना .... बहाया। इस .... के बहाये जाने बिना पापों की कोई माफ़ी नहीं है।

3. जब एक सिपाही ने बरछे या भाले से उसका पंजर बेधा तब तुरन्त .... और .... निकला।

4. यीशु ने हर एक मनुष्य के लिये .... के स्वाद को चखा।

5. पाप से बचने के लिये हमें यह विश्वास करने की आवश्यकता हैं कि परमेश्वर है, और यीशु उसका एकलौता .... है। जब तक हम विश्वास नहीं करेंगे, हम अपने .... में .... जाएंगे।

6. पाप हमें परमेश्वर की .... से अलग कर देता हैं, और हमें .... के .... बना देता हैं।

7. परमेश्वर सब जगह सारे मनुष्यों को आज्ञा देता हैं कि वह अपने पापों से .... फिराएं। यदि हम .... नहीं .... तो हम सब इसी रीति से .... होंगे।

8. पश्चाताप का अर्थ है कि हम .... और सांसारिक .... से मन-फिराना (तीतुस 2:11, 12)।

9. पतरस ने .... के दिन लोगों से कहा .... और तुम से हर एक अपने अपने .... की .... के लिये यीशु मसीह के नाम से .... ले।

10. जब हम बपतिस्मा लेते हैं तब यीशु का .... हमारे पापों को धो देता हैं।

निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत लिखें।

1. .... कुछ ऐसे राष्ट्र हैं जिन्हें परमेश्वर अपना अनुग्रह नहीं देगा।

2. .... यीशु ने हमारे पापों का दाम चुकाया है।

3. .... यीशु अपने लोहू से हमारे पापों को धो देता है।

4. .... यीशु जब क्रूस पर था, तब वह अपने पिता से अलग हो गया था।

5. .... इस बात से कोई फ़र्क नहीं पढ़ता कि मनुष्य इस पृथ्वी पर क्या करता है क्योंकि सारे मनुष्य बचाये जाएंगे।

6. .... मन-फिराने का मतलब है कि अपने पापों के लिए निराश होना या दुख महसूस करना, परन्तु जिस तरह से हम अपने जीवन को जी रहे हैं, उसमें कोई बदलाव लाना ज़रूरी नहीं हैं।

7. .... इस बात का अंगीकार करना कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, उद्धार को उत्पन्न करता है।

8. .... बपतिस्में का हमारे उद्धार से कोई संबंध नहीं हैं।

9. .... उद्धार तभी प्राप्त होता है जब कोई यीशु पर विश्वास करता है, और अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु के नाम में बपतिस्मा लेता है।

पाठ पांच
पानी का बपतिस्मा

यद्यपि हम में से कोई उद्धार प्राप्त करने के योग्य नहीं हैं, परन्तु परमेश्वर की ऐसी इच्छा है कि हम सब लोग बचाए जा सकें (2 पतरस 3:9)। हम में से कोई भी इतने अधिक धार्मिक काम नहीं कर सकता जिससे हम अपने उद्धार को कमा सकें, परन्तु अपने पापों से क्षमा पाने के लिये हमें आवश्यकता हैं कि हम परमेश्वर की उद्धार की शर्तों को मानें जो की उसने हमारे लिये अपने वचन में दी हैं।

परमेश्वर की इस उद्धार की शर्तों में शामिल हैं, परमेश्वर में विश्वास करना, अपने पापों से मन फिराना, इस बात का अंगीकार करना कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, और यीशु के साथ पानी की कब्र में बपतिस्में के द्वारा गाड़े जाना, और उसी क्षण यीशु का लहू हमारे पापों को धो देता हैं।

बहुत से धार्मिक संगठनों का ऐसा मानना हैं कि बपतिस्में को छोड़कर बाकि उद्धार की सभी शर्तों को मानना सही है। इन धार्मिक संगठनों का ऐसा मानना हैं कि बपतिस्में का उद्धार से कोई संबंध नहीं है। यह पाठ इस बात को दर्शाएगा कि उद्धार प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लेना कितना ज़रूरी है।

अब यह बात लगभग साफ़ हो चुकी है कि उद्धार एक प्रक्रिया है, जिसकी शुरुआत परमेश्वर का वचन सुनने से होता है, जो विश्वास उत्पन्न करता है। लेकिन, किस क्षण मनुष्य अपने पापों से छुटकारा पाता है? कई लोग इस बात को सिखाते हैं कि जिस क्षण मनुष्य परमेश्वर पर विश्वास करता है, उसी समय परमेश्वर उसे उसके पापों से बचा लेता है; और कुछ ऐसे लोग हैं जिनका ऐसा मानना हैं कि उद्धार मनुष्य को

उस समय मिलता है जब वह अपने पापों से पश्चाताप करता है या जब वह यीशु के ईश्वरीयत्व होने का अंगीकार करता है। यह बात कोई मान्य नहीं रखती कि एक अच्छा और ईमानदार मनुष्य उद्धार के विषय में क्या सोचता और क्या कहता है। परन्तु, यह बात बड़ी मान्य रखती है कि बाइबल उद्धार के विषय में क्या सिखाती है?

जैसा कि हमने पाठ चार में देखा था, पतरस ने लोगों को सिखाया, कि पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लेना कितना ज़रुरी है। हम इस बात को बखूबी देखते हैं कि उद्धार की प्रक्रिया केवल बपतिस्में की क्रिया में ही पूरी होती है।

शाऊल नामक व्यक्ति (जो बाद में प्रेरित पौलुस कहलाने लगा) के बारे में देखें जिसने कलीसिया को सताया था। यरूशलेम में मसीहियों को सताने के बाद शाऊल दमिश्क की ओर निकल पड़ा, ताकि वहां पर भी उपद्रव को अच्छी तरह फैलाया जा सकें। परन्तु, हम इस बात को देखते हैं कि जब शाऊल दमिश्क की ओर जा रहा था तो एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से उसकी आंखों पर चमकी जिसकी वजह से वह अंधा हो गया, और हम देखते हैं कि यीशु ने स्वर्ग से उससे बात की। पौलुस को अब इस बात का ज्ञान हो चुका था, कि जिस यीशु को वह सता रहा था वो वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है (प्रेरितों 9:4-6)। क्या पौलुस इस समय बच चुका था? या उसका उद्धार हो गया था? नहीं।

शाऊल को अपने किए पर इतना पश्चतावा था कि उसने तीन दिनों तक न कुछ खाया और न कुछ पिया (प्रेरितों 9:9)। उसने अपना पूरा समय निरंतर दुआ करने में लगाया (प्रेरितों 9:11)। क्या इन में से किसी भी क्रिया या घटना ने शाऊल को उसके पापों से बचाया? नहीं। जब हनन्याह उसके पास आया था, तब भी वह अपने पापों में खोया हुआ था तथा उद्धार से वंचित था। यदि कोई मनुष्य उपवास रखने से, दुआ करने

से, और अपने पापों पर शर्मिन्दा होने से बच सकता है, तो शाऊल का नाम इसमें सबसे आगे होना चाहिये।

परन्तु, हनन्याह ने शाऊल को यह शब्द बोले: "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल" (प्रेरितों 22:16)।

पौलुस के पाप तभी साफ़ हुए थे जब उसने पानी के अन्दर जा कर बपतिस्मा लिया था, और इस तरह उद्धार की इस प्रक्रिया को पूरा किया।

यीशु ने उद्धार की इस प्रक्रिया को शारीरिक जन्म के समान बताया। जब एक छोटा बच्चा मां के गर्भ में होता है, तो जन्म लेने से पहले उस छोटे बच्चे को बड़ा होने के लिये और जीवित बचे रहने के लिये काफ़ी समय की ज़रुरत होती है। जब बच्चे का जन्म होता है, और जैसे-जैसे वह उम्र में बड़ा होता है, तो उसे जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण बातें सिखाई जाती हैं।

जब परमेश्वर का वचन (जिसे लूका 8:11 में "एक बीज" कहा गया है) किसी के हृदय में बोया जाता है, हम देखते हैं कि उसे उस वचन को समझने और उसे मानने के लिये समय लगता है। जब किसी का बपतिस्मा हो जाता है, तब वह नये सिरे से जन्मा हुआ मनुष्य कहलाया जाता है अर्थात् उसका दोबारा से जन्म होता है (एक आत्मिक जन्म)। यीशु ने इन सच्चाईयों को नीकुदेमुस नाम के व्यक्ति को बड़े ही साफ़ तरीके से समझाया था। यीशु ने उससे कहा, "कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (यूहन्ना 3:5)।

"नये जन्म" की प्रक्रिया में बपतिस्मा एक आखरी कदम है। फिलिप्पी के दारोगा को लगभग आधी-रात के बाद परमेश्वर का वचन पौलुस

और सीलास द्वारा सिखाया गया था (प्रेरितों 16:25)। जब दारोगा ने पूछा कि उद्धार पाने के लिये वह क्या करें तब पौलुस ने उसे उत्तर दिया:

> "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। और उन्हों ने उस को, और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। और रात को उसी घड़ी उस ने उन्हें ले जाकर उन के घाव धोए, और उस ने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया। और उस ने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उन के आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनंद किया" (प्रेरितों 16:31-34)।

इस बात पर ध्यान करें कि परमेश्वर के वचन को सुनना इतना महत्वपूर्ण था कि दारोगा ने अपने सारे परिवार को आधी-रात के समय नींद में से जगाया ताकि वह सब पौलुस के मुंह से सुसमाचार की बातों को सुन सकें। जो सुसमाचार पौलुस ने इन लोगों को प्रचार किया था उस में बपतिस्मे के बारे में चर्चा होना काफ़ी स्वाभाविक है। इस बात पर कोई संदेह नहीं कि वह इस बात को अच्छी तरह समझते थें कि उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना कितना आवश्यक है। यदि दारोगा और उसका परिवार इस बात से बेख़बर थें कि उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना कितना आवश्यक है, तो वह आधी-रात के समय बपतिस्मा नहीं लेतें। इस बात पर ध्यान दें कि बपतिस्मा लेने के बाद वे सब आनंद से भरपूर हो गये, अर्थात् परमेश्वर पर विश्वास करके उन्हों ने आनंद किया।

अब हम कूश देश के रहने वाले खोजे के बारे में देखना चाहते है। यह व्यक्ति इथियोपिया देश का रहने वाला था। "तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?" (प्रेरितों 8:35, 36)।

इस बात पर ध्यान दें कि यदि यीशु का प्रचार सही रूप से किया गया हो, तो बपतिस्में की चर्चा हम उसमें ज़रूर पाएंगे। जब यीशु का प्रचार होता है तब ऐसा कोई दूसरा कारण नहीं है कि क्यों कोई बपतिस्मा लेना चाहता है जब तक "यीशु का प्रचार" करने का मतलब यह है कि किसी को यह बताना, कि किस तरह से उसे अपने पापों की क्षमा मिल सकती है जिसमे शामिल है पापों की क्षमा पाने के लिये बपतिस्मा लेना।

हम देखें कि बाइबल इस विषय में क्या कहती है? हम इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि जो लोग सुसमाचार को नहीं मानते वे संसार में अपने पापों में खो जाते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)। परन्तु, "परमेश्वर के सुसमाचार" को मानने का क्या मतलब है? यद्यपि सुसमाचार का मतलब क्रूस पर यीशु का हमारे पापों के लिये मारा जाना, यीशु का गाड़ा जाना, और फिर तीसरे दिन उसका मुरदों में से जी उठना है, तो किस तरह से हम इस सुसमाचार को मान सकते हैं? (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। हम उस उपदेश के सांचे को मानते हैं (रोमियों 6:17, 18)। हम पाप के लिये मरते हैं; हम यीशु के साथ बपतिस्में के द्वारा उसकी मृत्यु में गाड़े जाते हैं; और हम "नए जीवन की सी चाल चलने के लिये जी उठते हैं" (रोमियों 6:3-7)। मनुष्य इसी तरह से बपतिस्में में "सुसमाचार की आज्ञा" को मानता है।

बहुत से धार्मिक समूहों ने बपतिस्में को छिड़काव में बदल डाला हैं, परन्तु गाड़े जाने का मतलब है कि मनुष्य पूरी तरह से अपने आप को पानी से ढक ले। अर्थात् पूरी तरह से पानी के अंदर गाड़े जाना। खोजे के बारे में सोचें जिसने बपतिस्मा लेने की इच्छा ज़ाहिर की थी। बाइबल हमें बताती है कि खोजे ने इस प्रकार से बपतिस्में की इस क्रिया को पूरा किया: "तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा

ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनंद करता हुआ अपने मार्ग चला गया" (प्रेरितों 8:38, 39)।

इसलिये बपतिस्मा केवल उन के लिये हैं जिन्होंने यीशु में विश्वास किया हैं, अपने पापों से मन फिराया हैं, और सबके सामने इस बात का अंगीकार किया हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। पानी के अंदर गाड़े जाने के बाद ही हमारे पापों से हमें माफ़ी या छुटकारा प्राप्त होता हैं। नये सिरे से जन्म लेने के लिये बपतिस्मा एक अन्तिम कदम है। जिस किसी ने अभी तक अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा नहीं लिया है उसे ज़रूरत है कि वह उद्धार की इस प्रक्रिया पर गंभीरता से सोचे, तथा यह विचार करे कि यह बात कितनी महत्वपूर्ण है।

पाठ पांच के प्रश्न

खाली स्थानों को सही उत्तरों से भरिए।

1. बपतिस्मा .... प्राप्त करने के लिये .... है।

2. पतरस ने लोगों को इस बात को सिखाया, कि पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए .... लेना बहुत ज़रुरी हैं।।

3. जब शाऊल (पौलुस) का बपतिस्मा हुआ था, हम देखते है कि उसके .... यीशु के लहू में धुल गए थे।

4. परमेश्वर का वचन एक .... के समान है जो मनुष्यों के हृदयों में बोया गया हैं (लूका 8:11)।

5. जब कूश के खोजे ने यीशु के बारे में सुना तब उसने पूछा, "अब मुझे .... लेने में क्या रोक है?

6. सुसमाचार का मतलब है कि यीशु हमारे .... के लिये क्रूस पर मारा गया, हमारे लिये .... गया, और फिर तीसरे दिन मरे हुओं में से ....।

7. पश्चाताप (पाप के लिये मरना) और बपतिस्मा उद्धार की प्रक्रिया में एक .... हिस्सा है।

8. बपतिस्में के बाद हमें .... की सी चाल चलने के लिये उठाया जाता हैं।

9. दोनों फिलिप्पुस और खोजा .... में उतर पड़े और, फिर .... में से निकलकर ऊपर आएं।

10. बपतिस्मा यीशु की मृत्यु, उसके गाड़े जाना, और उसके पुनरूत्थान को .... है।

निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत लिखें।

1. .... जब हम बपतिस्मा लेते हैं तब यीशु का लहू उसी समय हमारे पापों को धो देता है।

2. .... उद्धार प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लेना ज़रूरी नहीं है।

3. .... शाऊल (पौलुस) जब दमिश्क के निकट पहुंचा तब उसी समय उसे मार्ग में अपने पापों से उद्धार मिला था।

4. .... शाऊल (पौलुस) को अपनी प्रार्थना और पश्चाताप के कारण उद्धार मिला।

5. .... नए जन्म की प्रक्रिया में बपतिस्मा एक आख़री कदम है।

6. .... बपतिस्मा लेने के बाद फिलिप्पी का दरोगा और उसका पूरा परिवार अपने उद्धार से आनन्दित हुए।

7. .... जो कोई सुसमाचार की आज्ञा को नहीं मानेगा वह नाश होगा।

8. .... छिड़काव, बपतिस्में की तरह ही है।

9. .... बाइबल के अनुसार, बपतिस्में में, बपतिस्मा लेने वाला मनुष्य पूरी तरह से पानी से ढक जाता है।

10. .... पहला मनुष्य जिसे डुबकी के बदले छिड़काव का बपतिस्मा दिया गया था उसका नाम नोवेशन था।

11. .... छिड़कांव और उंडेलने का "बपतिस्मा" मनुष्यों की रीति-रिवाज़ों पर आधारित हैं

12. .... रीति-रिवाज़ परमेश्वर के प्रति हमारी उपासना को व्यर्थ बना सकती है।

पाठ छह
कलीसिया

जब एक मनुष्य का बपतिस्मा अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये होता है, तो वह प्रभु यीशु के नाम में साफ़, पवित्र, और सिद्ध किया जाता है (1 कुरिन्थियों 6:11)। हर एक वो पाप जो मनुष्य ने अपनी ज़िन्दगी में किया है, उसे प्रभु यीशु अपने लहू से साफ़ कर देता है (प्रकाशितवाक्य 1:5)। जब मनुष्य परमेश्वर पर विश्वास लाता है, और सुसमाचार की आज्ञा को मानता है, तो वह परमेश्वर का एक बच्चा बन जाता है।

> "क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलतियों 3:26, 27)।

एक मसीह एक "नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वो सब नई हो गई" (2 कुरिन्थियों 5:17)। इस बात को हमेशा याद रखें कि एक मसीह पाप के लिये मर चुका है (पुरानी बातें बीत गई हैं); पापी मनुष्य मर चुका है, और एक नए मनुष्य का जन्म हुआ है (यूहन्ना 3:1-7)।

> "अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें" (रोमियों 6:4)।

हमें इस बात को जानने की आवश्यकता हैं कि जब कोई बपतिस्मा लेता है तब उसका पुराना मनुष्यत्व यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ जाता है, ताकि उसका पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और वह आगे पाप का दास न रहे (रोमियों 6:6)। अर्थात् बपतिस्में के बाद मनुष्य पाप से अलग होकर प्रभु यीशु मसीह में एक नया मनुष्य बन जाता है।

एक सवाल जो बहुत से लोग पूछते हैं वह यह हैं कि "क्या होता है यदि मैं बपतिस्मे के बाद दोबारा से पाप करता हूं? क्या मुझे दोबारा से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है?" इसका सीधा सा उत्तर यह है कि मनुष्य को हर एक पाप से मन फिराने की आवश्यकता है जो उसने किए है, और इसके साथ-साथ परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करना चाहिए, वो परमेश्वर जो हमें "हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)। हमारे पास एक ख़ास ज़िम्मेवारी है, कि हम इस बात को निश्चित करें कि हम अपनी अच्छी कोशिश के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा को हर एक बात में मानेंगें।

> "पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)।

दूसरे शब्दों में जब हम यीशु के लहू के संपर्क में आते हैं (बपतिस्में के द्वारा) तो हम देखते हैं कि यीशु का लहू रोज़ाना हमें हमारे पापों से साफ़ करता हैं और यह तब होता है जब हम हर तरह से प्रयत्न करते हैं परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये, अर्थात् जब हम उसकी सच्चाईयों के अनुसार आज्ञाकारी बनकर प्रसन्नता के साथ उसके साथ चलते हैं।

एक और बड़ी आशीष की बात यह है, कि प्रभु उद्धार पाए हुए मनुष्यों को स्वयं अपनी कलीसिया में मिला देता हैं (प्रेरितों 2:47)।

कलीसिया क्या है? यह कोई मनुष्य की बनाई हुई संस्था नहीं है। बाइबल हमें बताती है कि कलीसिया यीशु की देह है। यीशु क्रूस पर मारा गया ताकि वो इस देह को जो कि पाप से मुक्ति पानेवालों लोगों की एक मण्डली है, उद्धार दे सके, और उसकी ख़रीदारी के लिये दाम चुका सके; यीशु ने "अपने लहू से हमें मोल लिया है" (प्रेरितों 20:28)। अर्थात् उसने अपनी देह यानि कलीसिया की ख़रीदारी के लिये जो दाम चुकाया था वह

था उसका क्रूस पर बहाया गया बेशक़ीमती लहू। यीशु के लिये उसकी कलीसिया इतनी क़ीमती है कि वह इसका पालन-पोषण करता है, और इस से बहुतायत से प्रेम करता है (इफिसियों 5:29)।

इफिसियों की किताब कलीसिया और यीशु के साथ उसके संबंध के बारे में चर्चा करती है। पौलुस लिखते हुए कहता है कि परमेश्वर ने "सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है (इफिसियों 1:22, 23)। पौलुस यह भी लिखता है कि यीशु "कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है" (इफिसियों 5:23)। पौलुस फिर यीशु और कलीसिया के विषय में और बातों का वर्णन करता है:

> "हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया। कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन पवित्र और निर्दोष हो" (इफिसियों 5:25-27)।

इस बात को देखना काफ़ी साफ़ और सरल है कि यीशु ने ना केवल हम से इतना प्रेम किया कि वह हमारे पापों के लिये क्रूस पर मारा गया, परन्तु वो यह भी चाहता है कि हम बड़ी समझदारी के साथ अपनी मसीहीयत में आगे बढ़ सकें। इसी रीति से यह बात भी काफ़ी साफ़ और देखने में सरल है कि वास्तव में कितनी कलीसियाएं हैं: हम देखते है कि एक ही सिर है और एक ही देह (कलीसिया) है। इस सच्चाई के बारे में पौलुस इफिसियों 4:4 में बड़े साफ़ तौर से बताता है। "एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है"। यह वर्णन एक सिद्ध अर्थ बताता है; मनुष्य होने के नाते, हम में से हर एक के पास एक सिर और एक देह है।

यीशु संपूर्ण कलीसिया का सिर है। नए नियम में "चर्च" या "कलीसिया" शब्द को दो अर्थों में इस्तेमाल किया गया है। पहले अर्थ में हम देखते हैं कि यह सम्पूर्ण विश्वासियों की देह के लिये इस्तेमाल किया गया हैं (जैसा की हमने इफिसियों की किताब में देखा था। दूसरे अर्थ में हम देखते हैं कि बहुत बार यह स्थानीय परमेश्वर के लोगों की मण्डली की ओर संकेत करता हैं जैसे, "थिस्सलुनीकियों की कलीसिया" (1 थिस्सलुनीकियों 1:1)। परमेश्वर के लोगों की सारी व्यक्तिगत मण्डलियां पूर्ण रूप से कलीसिया को बनाती है, परन्तु हर एक मण्डली हर एक इलाके में मसीह की कलीसिया कहलाई जाती है।

आज कितनी अलग-अलग प्रकार की कलीसियाएं पाई जाती हैं? जबकि बाइबल केवल एक ही कलीसिया के विषय में हमें बताती हैं। इस बात को याद रखें कि इफिसियों 4:4 कहती है कि "एक ही देह है।" यद्धपि आज हम इस बात को देखते हैं कि चाहे कोई भी क्षेत्र हो, उस में हम अनेक अलग-अलग किस्म की, और अलग-अलग नामों से कहलाई जानेवाली कलीसियाओं को पाते हैं। यह धार्मिक समूह बाइबल में से निकलकर नहीं आए हैं। किसी मनुष्य या किन्ही लोगों के समूह ने इनकी शुरूआत करी थी। प्रभु यीशु केवल एक ही देह का सिर है। पौलुस ने इस प्रकार से लिखा था:

> "क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो क्या यूनानी, क्या दास हो क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया" (1 कुरिन्थियों 12:13)।

जब हमारा बपतिस्मा हमारे पापों की क्षमा के लिये हुआ था, और हमें प्रभु ने अपनी कलीसिया में मिला दिया था, तो इसकी संभावना है कि हम अपने साथ बहुत सी झूठी विचार धाराओं और रीति-रिवाजों को साथ लाए हों। हमें ज़रूरत हैं कि हम बाइबल में बताई गई सच्चाईयों को सीख़ें, और हमारा यह उद्देश्य होना चाहिए कि हम "एक ही मन और एक ही मत

होकर" मिले रहें (1 कुरिन्थियों 1:10)। कुरिन्थुस में जब मसीही लोगों ने अपने आप को अलग-अलग गुटों में बांट डाला था, तब पौलुस ने उन पर सांसारिक और भौतिक भावनाओं में पढ़ने का दोष लगाया था।

"क्योंकि जब एक कहता है, ''मैं पौलुस का हूं,'' और दूसरा, ''मैं अपुल्लोस का हूं,'' तो क्या तुम मनुष्य नहीं? (1 कुरिन्थियों 3:4)।

जो लोग यीशु के लहू से बचाए गए हैं वे सब उस एक देह में हैं- जो उसकी देह है। यीशु ने ख़ास तौर से एकता के लिये प्रार्थना की थी (यूहन्ना 17:20, 21), और सारे सच्चे विश्वासी मसीही इसी चीज़ को चाहते हैं। हमें अलग-अलग आत्मिक देहों में नहीं भेजा गया हैं जिसका संबंध विरोध धारावाली विचारों के साथ हैं। बाइबल हमें बताती हैं कि केवल एक ही देह है और एक ही कलीसिया है। यहां तक कि यहूदी और यूनानी (जो एक दूसरे से नफ़रत करते थें), अब वह दोनों इस एक देह के सदस्य हैं।

इस पद पर ध्यान दें:

"इस कारण स्मरण करो कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो (और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं, वे तुम को खतनारहित कहते हैं), तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे।

"पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया" (इफसियों 2:11-14)

अब सारी जगह पर सारे लोग (अमीर हो या गरीब काले हो या गोरे, पुरुष हो या स्त्री) उसकी कलीसिया के अन्दर एक हैं (गलतियों 3:27,

28)। पौलुस आगे यह भी लिखते हुए कहता है, कि कलीसिया एक भेद था जो कई समयों तक मनुष्यों से छिपा हुआ था, परन्तु अब वो भेद सब को बता दिया गया है (इफिसियों 3:1-7)।

मसीह की कलीसिया का एक सदस्य होना कितने आशीष की बात है। बाइबल हमें बताती हैं कि मसीह की कलीसिया एक आत्मिक राज्य है, जो जगत की उत्पत्ति से तैयार की गई थी (इफिसियों 1:4)।

> "देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं" (1 यूहन्ना 3:1)।

इसके बदले में हमारे पास बहुत सारी ज़िम्मेदारियां हैं। सबसे पहले अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करने के बाद, हमें वो सब करना चाहिए जिस से हम अपने आप को पवित्र रख सकते हैं (1 यूहन्ना 3:3)। दूसरी बात यह है कि क्योंकि हमारा दोबारा से जन्म हुआ हैं, हमें आवश्यकता हैं कि हम आत्मिक रूप से अपनी ज़िन्दगी में आगे बढ़े (1 पतरस 2:2)। ऐसा करने से हम इस बात को अच्छी तरह से सीख़ पाएंगे कि संपूर्ण देह (अर्थात् कलीसिया) "हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक-ठीक कार्य करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाएं" (इफिसियों 4:16)।

यदि आप सुसमाचार की आज्ञा को पहिले ही मान चुके है, तो आप वास्तव में आशीषित है कि आप मसीह की कलीसिया का एक हिस्सा हैं। अपने अन्तिम दो पाठों में हम उपासना और मसीही चाल-चलन के बारे में चर्चा करेंगे।

पाठ छह के प्रश्न

खाली स्थानों को सही उत्तरों से भरिए।

1. एक मसीही अपने पापों का अंगीकार .... से करता है।

2. .... के द्वारा हम यीशु के लहू के संपर्क में आते है।

3. कलीसिया यीशु की .... है।

4. चर्च या कलीसिया शब्द को कई बार .... विश्वासियों की देह कहकर सम्बोधित किया गया है, और कई बार इसे .... मण्डली कहकर भी सम्बोधित किया गया है।

5. यीशु अपनी .... का न केवल पालन-पोषण करता है, पर उस से बहुतायत से .... भी करता है।

6. "एक ही.............................. के द्वारा एक................................ . होने के लिये बपतिस्मा लिया।"

7. मसीहीयों को ज़रूरत है कि वह ".. ही .... और .... ही .... होकर मिल रहें।"

8. जब मसीहीयों में विभाजन हो जाता हैं, तो यह .... चिन्ह को प्रतीक करती है।

9. यूनानी या अन्यजाति होने के नाते हम .... के बिना थें; हमारे पास कोई .... नहीं थी।

10. हमें अपने आप को .... रखना चाहिए .... रूप से बढ़ना चाहिए, और कलीसिया

में होकर इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि कलीसिया में हम एक हिस्सा हैं जो अपने .... को करती है।

11. "हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं .... उखाड़ा ...." (मत्ती 15:13)।

12. "यदि घर को यहोवा न ...., तो उसके बनानेवालों का परिश्रम .... होगा" (भजन संहिता 127:1)।

13. जगत की .... से पहले ही कलीसिया की स्थापना की गई थी।

निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत लिखें।

1. .... कुछ ऐसे पाप हैं जिसे यीशु का लहू साफ़ नहीं कर सकता।
2. .... बपतिस्में के द्वारा हम यीशु को पहिन लेते हैं।
3. .... जब कोई मसीही व्यक्ति पाप करता है, तब उसे दोबारा बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है।
4. .... प्रभु उद्धार पाए हुए मनुष्यों को मनुष्य की बनाई हुई साम्प्रदायिक कलीसियाओं में मिला देता हैं।
5. .... कलीसिया का एक सिर है, और कई देह हैं।
6. .... केवल एक ही कलीसिया है जिसका सिर स्वयं यीशु मसीह है।
7. .... हमारे बीच में जो विभाजन की बीच की दीवार थी उसे यीशु ने तोड़ दिया है और दोनों यहूदियों और यूनानियों को एक कर दिया है।
8. .... सारे जगत के लोग चाहे वह किसी भी वंशावली से सम्बन्ध रखते हों, कलीसिया के अंदर एक हो सकते हैं।
9. .... एक मसीही होना बड़ी ही आशीष की बात है, जिसके साथ-साथ बड़ी ज़िम्मेवारियां भी जुड़ी हैं।

पाठ सात
सच्ची उपासना

एक मसीही परमेश्वर के साथ विशेष संबंध के आनंद का लाभ उठाता है। बपतिस्में के द्वारा मसीह की देह में मिलने के बाद, हर एक सदस्य उस महान परिवार का एक हिस्सा बन जाता है जिसे हम कलीसिया कहते हैं। प्रत्येक वो व्यक्ति जिस ने सुसमाचार की आज्ञा को माना है वह उस आत्मिक देह का हिस्सा है जिस के लिये मसीह ने क्रूस पर अपनी जान दी थी। व्यक्तिगत रूप से हम में से हर एक परमेश्वर की उपासना अकेले में अपने आप कर सकता हैं। हम अपने घर अपने परिवार के साथ मिलकर भी परमेश्वर की उपासना कर सकते हैं। दिन के किसी भी समय और हफ़्ते के किसी भी दिन हमारे पास यह आज़ादी है कि हम उसकी प्रशंसा के लिये गीत गा सकते हैं, और अपनी प्रार्थनाओं को उसके सामने रख सकते हैं। यह कोई ज़रुरी नहीं है कि परमेश्वर के पास जाने के लिये किसी प्रीस्ट या पुरोहित का सहारा लिया जाए। पूरी आज़ादी से हम परमेश्वर की उपासना किसी भी समय, और किसी भी जगह कर सकते हैं।

परन्तु, परमेश्वर द्वारा सप्ताह का पहिला दिन- सन्डे (रविवार), कलीसिया के लिये उपासना करने के लिये निर्धारित किया गया है। वास्तव में हम देखते हैं कि वह सप्ताह का पहिला दिन ही था जब तीन हज़ार (3,000) लोगों ने अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लिया था (प्रेरितों 2:38-41), और यह सभी 3000 लोग परमेश्वर द्वारा स्वयं अपनी कलीसिया में मिलाए गए थें (प्रेरितों 2:47)।

उस दिन से लगभग दो हज़ार साल वर्षों से ले कर अभी तक मसीही लोग सप्ताह के पहिले दिन इकट्ठा होकर परमेश्वर की उपासना करते

हैं, यीशु की मृत्यु को याद करते हैं जो कि उसने हमारे पापों के लिये क्रूस पर दी थी, परमेश्वर के वचन का हम अध्ययन करते हैं, प्रार्थना करते हैं, अपने चन्दे को देते हैं, और परमेश्वर की प्रशंसा के लिये गीत गाते हैं। सच्ची उपासना के स्वभाव को देखने के बाद, हम इन सभी बातों को विस्तार से देखेंगे। नीचे दी गई आयतों पर विशेष ध्यान दें।

सच्ची कलीसिया का स्वभाव

''इसलिये अब यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे, उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो" (यहोशू 24:14)।

> "केवल इतना हो कि तुम लोग यहोवा का भय मानो, और सच्चाई से अपने सम्पूर्ण मन के साथ उसकी उपासना करो; क्योंकि यह तो सोचो कि उस ने तुम्हारे लिये कैसे बड़े बड़े काम किए हैं" (1 शमूएल 12:24)।
>
> "परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही अराधकों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी अराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से अराधना करें" (यूहन्ना 4:23, 24)।
>
> "वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो" (कुलुस्सियों 3:17)।

हम इस बात को देखते हैं कि बाइबल की पहिली तीन आयतें जिस के बारे में अभी हमने देखा, आपस में काफ़ी मिलती-जुलती हैं। तीनों

आयतों में सच्चाई शब्द का इस्तेमाल किया गया हैं। उपासना, यदि सही है, तब यह ज़रुरी है कि वह सच्चाई के अनुसार हो। हमें केवल वो ही काम या बातें करनी चाहिए जिस के विषय में परमेश्वर ने अपने वचन में आज्ञा दी है।

चौथी आयत इसी बात को दर्शाती है। जो कुछ भी हम कार्य में होकर करते हैं (जिस में उपासना भी शामिल है), और जो कुछ भी हम वचन में होकर करते हैं (जिस में शामिल है वचन को सिखाना), यह सारी बातें यीशु के नाम से या उसके नाम में होनी चाहिए, जिसका असली अर्थ है, यीशु के अधिकार से सब बातों को करना।

जो उपासना हम परमेश्वर को देते हैं, और यदि वह ऐसी उपासना करने की हमें अनुमति नहीं देता, तब वह सच्ची उपासना नहीं है। सच्ची उपासना, हमारे पूरे हृदय से, पूरी ईमानदारी से, वचन अनुसार, और आत्मा में होकर होनी चाहिए। उपासना जो प्रेम के बिना है, उसे हम अपने सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अर्पित नहीं कर सकते हैं। ऐसा करने से परमेश्वर का अनादर होता है जिस तरह से उसका अनादर इस्राएल के याजकों ने किया था जब उन्होंने ने उसे अपनी उपासना को अर्पित किया था, परन्तु वह बोलें, "यह कैसा बड़ा उपद्रव है" (मलाकी 1:13)।

प्रभु भोज लेना

जब कलीसिया की स्थापना पहिली शताब्दी में हुई थी, तब प्रेरितों ने सप्ताह के पहिले दिन इकट्ठा होकर रोटी को तोड़ा (प्रेरितों 20:7; 2:42)। यह पदबंध "रोटी तोड़ना" प्रभु भोज को दर्शाता है, जो हमें इस बात की याद दिलाता है कि यीशु ने हमारे पापों के लिये क्रूस पर अपनी जान दी थी। अपनी देह को क्रूस पर बलिदान किया।

पौलुस ने कुरिन्थियों की कलीसिया को प्रभु भोज के उद्देश्य के बारे में इस तरह से बताया था ताकि वह इसके महत्व को समझें।

"क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दी कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली और धन्यवाद करके उसे तोड़ी और कहा, ''यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।''

"इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा; 'यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।' क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो" (1 कुरिन्थियों 11:23-26)।

इस यादगार में जो अखमीरी रोटी का इस्तेमाल किया गया है, वह हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह की देह को दर्शाता है, जो हमारे पापों के लिये क्रूस पर मारा गया। "दाखरस" अर्थात् अंगूर का रस, यीशु के लहू को दर्शाता है, जो उसने जगत के सभी पापियों के लिये क्रूस पर बहाया था। प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन अर्थात् रविवार को (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 11:23-33) हम सब उसकी मेज़ के सामने इकट्ठा होते हैं, ताकि हम यीशु के उस महान बलिदान को स्मरण कर सकें

चंदा देना

"तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ" (2 कुरिन्थियों 8:9)।

परमेश्वर "हर्ष से देनेवाले" से प्रेम रखता है (2 कुरिन्थियों 9:7), और मसीहीयों के पास यह अवसर हैं कि वह अपनी "आमदनी" के अनुसार, और पूरी स्वतंत्रता और उदारता के साथ परमेश्वर के कार्यों के लिये चंदा

दें। पौलुस ने कुरिन्थुस में अपने मसीही भाईयों को यह आज्ञा दी थी कि वह सप्ताह के पहिले दिन अपनी आमदनी के अनुसार सुसमाचार प्रचार करने, और कलीसिया के दूसरे कार्यों के लिये अपना चंदा दें (1 कुरिन्थियों 16:1,2)।

प्रेरितों की शिक्षा में निरन्तर बने रहना

पिन्तेकुस्त के दिन जब तीन हज़ार लोगों का बपतिस्मा हुआ था, वे सभी लोग इस बात को जानते थें कि अब उनके पाप क्षमा किए गए हैं, परन्तु उन्हें इस नए राज्य के बारे में, अर्थात् इस नए राज्य (कलीसिया) की शिक्षाओं को और अधिक सीखने की आवश्यकता थीं। इसलिये हम देखते हैं, कि प्रेरितों ने इन तीन हज़ार लोगों को वह सारी बातें सिखाईं जो पवित्र आत्मा ने उन पर प्रकट की थीं (प्रेरितों 2:42)। जो कुछ भी प्रेरितों ने प्रेरणा से बोला या लिखा, उनके सारे बोल सच्चाई थी, अर्थात् वह परमेश्वर का वचन था (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)। बिरीया के लोगों की तरह हमें प्रतिदिन पवित्रशास्त्र मे सत्य को खोजना चाहिए, अर्थात् रोज़ाना परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना चाहिए, ताकि हम इस बात से निश्चित रहें कि हमें सच्चाई सिखाई जा रहीं हैं। हम रोज़ाना परमेश्वर के वचन का अध्ययन इसलिये भी करें, ताकि हम आत्मिक दृष्टिकोण से अपनी ज़िन्दगी में आगे बड़ सकें। (1 पतरस 2:2)।

प्रार्थना करना

पौलुस ने कहा था कि हम "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहें" (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। हर एक मसीही को कई बार प्रतिदिन यीशु के द्वारा पिता-परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, और इसके साथ-साथ सप्ताह के पहिले दिन सब मसीहीयों के साथ मिलकर परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए; परमेश्वर को निरन्तर हमारे विचारों और हमारे हृदयों में वास करना चाहिए। इस बात को परमेश्वर के

वचन से जानते हुए कि वह हम से कितना प्रेम करता हैं, हम परमेश्वर को उसकी महानता, और उसकी अनुग्रही रूपी उद्धार के लिये धन्यवाद देते हैं। हम अपनी प्रार्थनाओं को भी परमेश्वर के सामने रख सकते हैं, परन्तु इन प्रार्थनाओं में स्वार्थीपन नहीं होना चाहिए (याकूब 4:3)।

> "किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु मे सुरक्षित रखेगी" (फिलिप्पियों 4:6, 7)।

गीत गाना

मसीहियों के पास एक और ज़िम्मेवारी हैं, कि वह आपस में, अर्थात् एक दूसरे से भजन, स्तुतिगान, और आत्मिक गीत गाकर बात करें, और परमेश्वर के लिये गीत गाकर अपने हृदयों में मधुर संगीत बनाएं (कुलुस्सियों 3:16)।

नया नियम हमें इस बात की अनुमति देता हैं कि हम परमेश्वर के लिये गीत गाएं, और आपस में भजन, और, स्तुतिगान, और आत्मिक गीत गाया करें। नया नियम हमें कभी गाने के साथ बाज़ों का इस्तेमाल करने की आज्ञा नहीं देता। याद रखें कि हमें वही करना हैं जिस की अनुमति यीशु ने हमें दी हैं (कुलुस्सियों 3:17)। नए नियम में हम कहीं भी नहीं देखते है कि यीशु और उसके चेलों ने आत्मिक गानों को बाज़ों के साथ गाया। हमारा भजन और गीत गाना पवित्रशास्त्र की शिक्षानुसार होना चाहिए, अर्थात् परमेश्वर की प्रशंसा के लिये गीत गाना बिना बाज़े के होना चाहिए।

यारोबाम का पाप

एक व्यक्ति जिसका नाम यारोबाम था, उसने परमेश्वर की आज्ञा न मानकर उसकी उपासना को बदल डाला (1 राजा 12:25–33)। यारोबाम का यह निर्णय परमेश्वर के इतना विरोध में था, कि न केवल उस से बड़ा पाप हुआ, पर उस ने इस्राएल के लोगों को परमेश्वर के पीछे न चलने से मना करके उन से भी बड़ा पाप कराया (2 राजा 17:21)। इस उदाहरण से हम यह देखते है, कि किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह परमेश्वर की उपासना में कुछ जोड़े, और न ही किसी को यह अधिकार है कि वह परमेश्वर की उपासना में से कुछ घटाएं। हमें इस बात से संतुष्टि होनी चाहिए कि हम परमेश्वर की उपासना उसकी आज्ञा अनुसार करें।

“परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया हैं।”

“उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ (और परमेश्वरत्व) जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरूत्तर हैं।”

“इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया।”

“वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए, और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।”

“इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनकी मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है! आमीन” (रोमियों 1:18-25)।

पाठ सात के प्रश्न

खाली स्थानों को सही उत्तरों से भरिए।

1. .... का .... दिन वो समय है जब मसीही लोग एक साथ इकट्ठा होकर परमेश्वर को अपनी .... सौपते हैं।

2. रोटी, यीशु मसीह की .... का प्रतीक है जो हमारे पापों के लिये क्रूस पर तोड़ी गई; दाखरस, यीशु मसीह के .... का प्रतीक है जो हमारे पापों की क्षमा के लिये क्रूस पर बहाया गया।

3. पौलुस ने मसीहीयों को यह आज्ञा दी थीं कि वह .... के .... दिन, अपनी .... के अनुसार परमश्ेवर के कार्यों के लिये अपना चंदा दें।

4. प्रेरितों ने पवित्र आत्मा की .... से बोला।

5. हमें प्रतिदिन .... का .... करना चाहिए, ताकि हम इस बात से निश्चित रहे कि हमें .... सिखाई जा रही हैं।

6. मसीहीयों को यह सिखाया गया हैं कि वह .... प्रार्थना में लगे रहें।

7. परमेश्वर के प्रति हमारी प्रार्थनाएं केवल .... वस्तुओं या बातों के लिये नहीं होनी चाहिए।

8. मसीहीयों को एक दूसरे से ...., और ...., और .... गानों के द्वारा बोलना चाहिए।

9. एक राजा जिस का नाम .... था, उस ने

परमेश्वर की उपासना को बदल डाला। ऐसा करने से इस्राएल के राष्ट्र ने परमेश्वर के खिलाफ़ या उसके विरोध में एक .... पाप कर डाला।

10. किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह परमेश्वर की उपासना के नियमों में कुछ .... सकें, और न ही उस में से कुछ .... सकें।

निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत लिखें।

1. .... क्योंकि हम व्यक्तिगत रूप से या अकेले होकर परमेश्वर की उपासना कर सकते हैं, यह ज़रूरी नहीं है कि हम कलीसिया के साथ मिलकर परमेश्वर की उपासना करें।

2. .... सच्चाई, उपासना का महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं है। उपासना में ईमानदारी ही सब कुछ मान्य रखती है।

3. .... "रोटी तोड़ना, प्रभु भोज की ओर संकेत करता है"।

4. .... मसीहीयों को, प्रभु भोज में महीने में एक बार हिस्सा लेना चाहिए।

5. .... प्रतिदिन बाइबल का अध्ययन करने से हम अपने आत्मिक जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

6. .... परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को नहीं सुनना चाहता हैं।

7. .... नया नियम हमें कभी भी यह अनुमति नहीं देता, कि जब हम परमेश्वर की प्रशंसा के लिये गाने गा रहें हो तो उस में बाज़ों का इस्तेमाल करें।

8. .... मसीहीयों को परमेश्वर के वचन को सिखाने और उस के अभ्यास के लिये किसी भी अधिकार की आवश्यकता नहीं हैं।

पाठ आठ
मसीह में नई ज़िन्दगी

एक मसीही वो है जो पश्चाताप के ज़रिएं पाप के लिये मर चुका है, बपतिस्में के द्वारा यीशु के साथ गाड़ा गया है, और नए जीवन की सी चाल चलने के लिये बपतिस्मा की कब्र से बाहर आया है (रोमियों 6:4); वह दोबारा से "जन्मा हुआ" व्यक्ति है (यूहन्ना 3:5)। क्योंकि हम पाप के लिये मर चुके है, इसलिये हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि "हम अपने आप को पाप के लिये मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझें" (रोमियों 6:11)।

"इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के आधीन रहो और न अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपों, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो" (रोमियों 6:12, 13)

हम मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए हैं (गलतियों 2:20)। हम ने अपने पुराने मनुष्यतत्व, अर्थात् पाप के शरीर को मार डाला है; हमारी मसीह में नई ज़िन्दगी पुरानी ज़िन्दगी से अलग होनी चाहिए। बहुत से बदलाव हैं जो हमें अपनी ज़िन्दगी में लाने की आवश्यकता हैं। हमें पवित्र होने की आवश्यकता हैं क्योंकि परमेश्वर पवित्र है। (1 पतरस 1:14-16)। परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है (1 थिस्सलुनीकियों 4:7)।

हमारे पश्चाताप के कारण परमेश्वर ने हमारे पापों को धो डाला, जब हम ने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिसमा लिया था (प्रेरितों 22:16); और फिर हमें मसीह की देह में स्वयं यीशु द्वारा मिलाया गया

था, वो देह जिसे हम कलीसिया कहते हैं (प्रेरितों 2:47)। हमारे विश्वास और परमेश्वर के प्रति हमारे आज्ञाकारी होने के आधार पर परमेश्वर ने यह वादा किया है कि वह हमारे पापों को क्षमा कर देगा (प्रेरितों 2:38), और हमें अनंत जीवन का मुकुट देगा (इब्रानियों 5:9)। हमें परमेश्वर के वायदे पर भरोसा हैं (कुलुस्सियों 2:12)।

> "अत: हे प्रियो, जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें" (2 कुरिन्थियों 7:1)।

पौलुस मसीही जीवन की तुलना इस प्रकार से करता है जैसे कोई अपने कपड़े बदलता है (कुलुस्सियों 3:1-17)। सोचें उस मज़दूर के बारे में जिस ने अपना सारा वक्त खेतों में काम करके बिता डाला। उसके हाथ धूल मिट्टी से मैले हुए है, और उसका शरीर पसीने से भीगा हुआ है (पाप हमें आत्मिक दृष्टिकोण से गंदा कर देता है)। खेत में पूरे दिन काम करने के बाद, मज़दूर अपने घर आता है, और अपने गंदे कपड़े उतार डालता है। फिर वह साबुन और पानी ले कर अच्छी तरह से स्नान करके अपने आप को पसीने और धूल से साफ़ करता है, और फिर नए कपड़ों को पहनता है। जब हम अपने पापों से मन फिराते हैं, और पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लेते हैं; हम अपने पुराने कपड़ों को उतार डालते हैं, और मसीह के लहू में धोए जाते हैं।

क्या हम दोबारा पुराने कपड़ों को पहनना चाहेंगे जो पसीने और धूल से ढके हुए हैं? कदापि नहीं। हम तो धार्मिकता के साफ़-सुथरे कपड़े पहनना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि जिस तरह से परमेश्वर ने हमें पवित्र बनाया हैं, उसी तरह से हम उसके पवित्र लोग बनकर रहें (1 पतरस 2:9)। निम्नलिखित कुछ आयतें हैं जिसमें पौलुस यह तुलना करता है:

> “अत: जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ, क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है” (कुलुस्सियों 3:1-3)।

हमारी सोच को भी बदलने की आवश्यकता है (2 कुरिन्थियों 10:5)। हमें स्वर्गीय या आत्मिक बातों पर अधिक ध्यान लगाना चाहिए न कि पृथ्वी पर पाई गई वस्तुओं और बातों पर, जिन पर हमारा काफ़ी ध्यान और मन रहता हैं। हमें उन विचारों को मार गिराना चाहिए जो वापस हमें पाप में ले जा सकते है जैसे कि “व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है” (कुलुस्सियों 3:5)।

पौलुस अब उन चीज़ों के बारे में बात कर रहा हैं जिन्हें हम ने गन्दे कपड़ों की तरह उतार डालना हैं।

> “पर अब तुम भी इन सब को, अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है” (कुलुस्सियों 3:8-10)।

इसकी पांचवी आयत में हम यौन संबंधित समस्याओं के बारे में देखते हैं, और 8-10 आयतों में हम मनुष्य के व्यवहार, और बोलचाल के विषय में देखते हैं। जब हम एक मसीही बन जाते हैं, तो हम अपने जीवन में कई बदलाव लाते हैं। जिस तरह से हम सोचते हैं वह बदल जाता है। अर्थात् हमारे सोचने का तरीक़ा एक मसीही बनने के बाद

काफ़ी बदल जाता है। ज़िन्दगी को अब हम केवल प्रतिदिन जीने के उससे नहीं देखते, परन्तु अब हम ज़िन्दगी को अनंतकाल की रोशनी में रहकर देखते हैं। इस समय, बातें जो हमारे लिये काफ़ी महत्वपूर्ण है वह है यीशु और उसकी बनाई हुई कलीसिया। यीशु अपने लोगों को स्वर्ग में ले जाने के लिये वापस आ रहा है। यीशु हमारी ज़िन्दगी हैं (कुलुस्सियों 3:4)। उस समय तक जब तक यीशु वापस नहीं आता (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9), हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम अपने प्राण देने तक विश्वासी बने रहें।

हमारे व्यवहार संसार के पापी व्यवहारों से जो हममें किसी समय थे, उन सब से अब अलग होने चाहिए। हमें अपने गुस्से पर नियंत्रण करना चाहिए, अपने गुस्से को दूसरों के देखने के लिये प्रकट नहीं करना चाहिए। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम अपने मुंह से क्या बोल रहे हैं: एक गंदगी से भरा हुआ मुंह हमारी शुद्ध की गई आत्मा में नहीं पाया जाना चाहिए। हमारी जीभों को हमें गन्दी बातें या दूसरों को धोका देने के लिये नहीं इस्तेमाल करना चाहिए। वास्तव में जो लोग सच्चाई के मार्ग पर चलने वालें हैं, वे कभी झूठ नहीं बोलेंगे। परन्तु मसीहीयत, अनुचित पुराने विचारों, व्यवहारों, और कार्यों को अपने जीवन में से बाहर निकालकर फेंकना इससे कई बढ़कर है। हमें आवश्यकता हैं कि हम नए कपड़ों को पहने जो परमेश्वर हम से चाहता हैं।

"इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र ओर प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो, और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।"

"इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो।
मसीह की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए

हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे; और तुम धन्यवादी बने रहो" (कुलुस्सियों 3:12-15)।

अपने आप को बदलना इतना आसान काम नहीं है। घमंड को मन की नम्रता में बदलने की आवश्यकता है; गुस्से को दया, धीरज, एक दूसरे की सहने में, और अपराध क्षमा करने में बदलने की आवश्यकता है। स्वार्थीपन को प्रेम में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। एक मसीही बनने का मतलब है एक नया मनुष्य बनना - केवल परमेश्वर के साथ रिश्तेदारी में ही नहीं, परन्तु दूसरों के सामने भी वह एक नया मनुष्य होता है। हमें आवश्यकता हैं कि हम यीशु के स्वरूप में बन जाएं। (रोमियों 8:29)। यद्यपि हमें धार्मिकता के लिये दुख उठाना पढ़ें, हमें आवश्यकता हैं कि हम उसके बताए गए आदर्श और चिन्हों पर चलें। (1 पतरस 2:21-24)।

मसीह में यह नई ज़िन्दगी हमारे सारे सांसारिक संबंधों में नई ताज़गी लाती है। इसका अर्थ यह है कि हम एक अच्छे पति और पत्नी बन सकते हैं (कुलुस्सियों 3:18-21; इफिसियों 5:22, 23)। हम एक अच्छे दास (सेवक) और स्वामी (मालिक) बन सकते हैं (कुलुस्सियों 3:22; 4:1)। हम एक अच्छे नागरिक बन सकते हैं। (1 पतरस 2:13-17)।

एक मसीही होना कितनी आशीष की बात है, वह अब एक नया मनुष्य होकर अच्छे सांसारिक संबंधों का लाभ उठा रहा है। सबसे बड़ी आशीष की बात यह है, कि हम रोशनी में चलने वालें परमेश्वर के बच्चों में से एक है, ना की अंधेरे में चलने वालें शैतान के बच्चों में से एक।

"इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)।

मसीहीयों का क्या कर्तव्य है?

यदि आपका बपतिस्मा पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये मसीह में हुआ है, तब एक मसीही होने के नाते आपके पास काफ़ी आशीषों के साथ-साथ अनेक जिम्मेवारियां या कर्तव्य भी हैं। एक मसीही होने के नाते हमारा सबसे पहिला कर्तव्य यह बनता है, कि हम अपने जीवन में परमेश्वर को पहिला स्थान दें (लूका 14:26-33; मत्ती 22:37-39)। दूसरा कर्तव्य यह है, कि हम "डरते और कांपते हुए अपने-अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते जाएं" (फिलिप्पियों 2:12)।

अगला कर्तव्य हमारा यह बनता है, कि हम "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखें" (मत्ती 22:39)। कलीसिया में भाईयों के प्रति हमारी कुछ जिम्मेवारियां हैं, जो हमें एक सच्चे मसीही होने के नाते निभानी चाहिए। जो लोग मसीही नहीं हैं, उनके प्रति भी हमारा कर्तव्य बनता हैं। सारे मसीही भाईयों को एक दूसरे से प्रेम रखना चाहिए जिस प्रकार से मसीह ने हम से प्रेम रखा (यूहन्ना 13:34, 35; 1 यूहन्ना 4:7, 8)। बहुत से ऐसे पद हैं जो एक दूसरे की मदद करने के विषय में बोलते हैं जैसे, एक दूसरे को सिखाना, सावधान करना, प्रोत्साहित करना, और प्रेम से एक दूसरे की सेवा करना (इफिसियों 5:19; इब्रानियों 3:13; गलतियों 5:13, और इस के अलावा अनेक और भी आयतें हैं)।

उन लोगों का क्या जो मसीही नहीं हैं? अर्थात् एक मसीही होने के नाते किस तरह से हमें उनके साथ बरताव करना चाहिए?

> "अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करो। तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए" (कुलुस्सियों 4:5, 6)।

पौलुस ने कहा था कि वह सब मनुष्यों का कर्ज़दार हैं, अर्थात् वह उन्हें सुसमाचार देने का क़र्ज़दार था (रोमियों 1:14)। इसी रीति से तुम एक मसीही होने के नाते, लोगों को सुसमाचार देने के क़र्ज़दार हो। ख़ास तौर से जब हम उन लोगों से बातें करते हैं जो मसीह में विश्वासी नहीं हैं, हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम इस संसार में परमेश्वर के एक व्यक्तिगत प्रतिनिधि के रूप के समान हैं। हमें इस संसार में इस प्रकार से जीना चाहिए, ताकि दूसरे हमारे अन्दर मसीह की सही और सच्ची तस्वीर को देख सकें।

यदि आपने अभी तक सुसमाचार की आज्ञा को नहीं माना है, आपको आवश्यकता है कि आप इस बात पर गम्भीरता से ध्यान दें, कि आपके पापों ने आपकों अनन्तकाल का दण्ड कमाकर दिया है, परन्तु परमेश्वर चाहता है कि आपको अनन्तकाल का जीवन प्राप्त हो (रोमियों 6:23)।

मसीह की कलीसिया में आप किसी से संपर्क करे, और उसे बोलें कि वह आपको पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा दे (प्रेरितों 2:38)। बपतिस्मा लेने के बाद आप उस कलीसिया के एक सदस्य बन जाएंगे, जिस के बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं, और जिस के लिये यीशु ने क्रूस पर अपनी जान दी। जैसे-जैसे आप अपने विश्वास में आगे बढ़ते है, और एक मसीही जैसी चाल चलते है, परमेश्वर आपको बहुतायत से आशीषित करेगा।

एक मसीही जीवन शैली

"प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो।"

"तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो। प्रभु निकट है।"

"किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।"

"इसलिये, हे भाईयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरनीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र है, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात्, जो भी सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं उन पर ध्यान लगाया करो।"

"जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण कीं, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा" (फिलिप्पियों 4:4-9)।"

पाठ आठ के प्रश्न

खाली स्थानों को सही उत्तरों से भरिए।

1. यद्यपि मनुष्य एक मसीही बन जाता है, तौभी हम इस बात को देखते हैं कि .... की समस्या पर विजय प्राप्त करने की बात हमेशा ज़िन्दा रहती है। हमें इस बात को समझना चाहिए कि हम पाप के लिये .... हुए हैं, और परमेश्वर के लिये .... हैं।

2. एक मसीही बनने का मतलब है .... कपड़ों को उतारकर .... कपड़ों को पहनना।

3. एक मसीही को अपना ध्यान .... की बातों पर लगाना चाहिए, न की .... की बातों पर।

4. जब हम एक मसीही बन जाते हैं, तो हम अपने जीवन में बहुत से .... लाते हैं।

5. एक .... मुंह .... की गई आत्मा में नहीं पाया जाना चाहिए।

6. .... को दया में, और .... को प्यार में बदलने की आवश्यकता है।

7. हमें अपने आप को मसीह के स्वरूप में .... की आवश्यकता हैं।

8. हमें यह आदेश दिया गया है कि हम .... और .... हुए अपने उद्धार के कार्य को पूरा करें।

9. हमें अपने जीवन में परमेश्वर को .... स्थान देना चाहिए, और हमें अपने पड़ोसियों से ऐसे .... करना चाहिए जैसा हम अपने आप से करते हैं।

निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत लिखें।

1. .... हमें पवित्र होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, और उस ने हमें पवित्रता में बुलाया हैं।

2. .... परमेश्वर ने अनंत जीवन देने का वादा उनसे किया हैं जो अन्त तक उसके प्रति विश्वासी और आज्ञाकारी बनकर रहेंगे।

3. .... व्यभिचार और यौन संबंधी सारे पापों से दूर रहना चाहिए।

4. .... एक मसीही का गुस्सा होना, और कभी-कभी झूठ बोलना कोई गलत बात नहीं है।

5. .... एक मसीही बनने के बाद हम अपनी सोच को, अपने व्यवहार को, और अपनी बोली को अच्छे के लिये बदल ड़ालते हैं।

6. .... यीशु अपने लोगों को स्वर्ग में ले जाने के लिये एक दिन वापस आएगा।

7. .... एक मसीही बनकर हम एक अच्छे पति, एक अच्छी पत्नी, एक अच्छा दास, और एक अच्छा नागरिक बन सकते हैं

8. .... जो लोग मसीही नहीं हैं, उनके प्रति मसीहीयों का कोई कर्तव्य नहीं हैं।

9. .... सुसमाचार फैलाने का कार्य अब मसीहीयों का नहीं हैं।

10. .... परमेश्वर की ऐसी इच्छा है, कि कुछ ही लोगों को अनंत जीवन मिल सके।

पाठों को इस पते पर भेज दीजिये:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स नं. 4398
नई दिल्ली-110019

कोरियर से भेजने के लिये हमारा पता है:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
मार्केट नम्बर 4
सी. आर. पार्क
नई दिल्ली-110019

इस पृष्ट को भरकर अवश्य भेजें।

आपका नामः ....

आपका पताः ....

....

....

आपका मोबाइल न॰: ....

परमेश्वर आपसे क्या चाहता है?

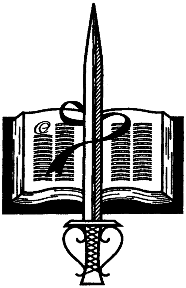

''अब मैं सब से पहले यह आग्रह करता हूं कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किए जाएं। राजाओं और सब ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है, जो यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भांति पहचान लें'' (1 तीमुथियुस 2:1-4)

परमेश्वर आपसे क्या चाहता है?

प्रेरित पौलुस और प्रेरित पतरस दोनो ने बड़ी ही दृढ़ता से इस सत्य को सामने रखा, कि परमेश्वर चाहता है सब लोगों का उद्धार हो। 2 पतरस 3:9 में लेखक इस प्रकार से कहता है कि ''प्रभु तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।''

इसलिये परमेश्वर ने.........

- सब मनुष्यों के ऊपर अपना महान अनुग्रह प्रगट किया है (तीतुस 2:11)।
- पवित्र आत्मा को भेजा ताकि वह हमें सत्य का मार्ग बताए (यूहन्ना 16:13)।

- हमें अपना पवित्रशास्त्र दिया है ताकि हम "हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाएं" (2 तीमुथियुस 3:16-17)।
- अपने प्रेरितों को (और उनके द्वारा हमें भी) इस संसार में भेजा ताकि हम सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार का प्रचार कर सकें (मरकुस 16:15-16)।
- ऐसा होने दिया कि उसका एकलौता पुत्र हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे" (इब्रानियों 2:9)।
- "हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, उद्धार के निमित्त" सुसमाचार के द्वारा अपनी सामर्थ को दिया (रोमियों 1:16)।
- हमें जीवन के वृक्ष के पास आने का अधिकार दिया और स्वर्ग के फाटकों में से प्रवेश करने का अधिकार दिया है, परन्तु यह दोनों अधिकार इस बात पर निर्भर करते हैं कि क्या हम परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी है या नहीं? (प्रकाशितवाक्य 22:14)।

परन्तु परमेश्वर इसके बदले में हमसे क्या चाहता है?

- परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी बातों को सुनें और सीखें (यूहन्ना 6:45)।
- परमेश्वर चाहता है कि हम इस बात को स्वीकार करें कि हमारा विश्वास उसमें और उसके पुत्र में है (इब्रानियों 11:6 और यूहन्ना 8:24)।
- परमेश्वर चाहता है कि मन परिवर्तन के समय हमारे अंदर एक दृढ़ निश्चय हो ताकि हम यह कह सके कि अब हम अपना जीवन मसीह के लिये जियेंगे, और हमारे अंदर अपने पापों से मन फिराने की एक सच्ची भावना जाग्रत हो सकेगी (प्रेरितों 3:19)।
- परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं का नम्रता से पालन करें (इब्रानियों 5:8-9)।

मैं कैसे जान सकता/सकती हूं कि परमेश्वर मुझ से क्या चाहता है?

मैं जान सकता/सकती हूं क्योंकि परमेश्वर ने अपनी इच्छाओं को ‘‘स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था’’ में प्रगट किया है (याकूब 1:25)। उसने अपने प्रिय पुत्र यीशु को नए नियम का बिचवई बनाकर दिया है (इब्रानियों 9:15-17)। ऐसा करके परमेश्वर ने सारी पीढ़ियों के मनुष्यों के लिये जो उसकी इच्छा के आधीन रहने को तैयार हैं, उन्हें उसने मार्ग, सच्चाई, और जीवन उपलब्ध करवाया है। उसने हमें इस बात की चुनौती दी है कि हम परमेश्वर की भली, भावती, और सिद्ध इच्छा को प्रमाणित करें (रोमियों 12:2)। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके शक्तिशाली हाथों के सामने अपने आपको नम्र करें ताकि वह हमें ऊपर उठा सके अर्थात् हमें शिरोमणी बना सके (याकूब 4:10)।

परमेश्वर ने हमें सुसमाचार के बारे में चार वर्णन दिये हैं

मत्ती, मरकुस, लुका, और यूहन्ना की किताबों में, परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र यीशु के जीवन, उसकी मृत्यु, उसके गाड़े जाने, और उसके पुनरुत्थान के बारे में चार अलग-अलग वर्णन दिये हैं। उसने हमें यीशु के सिद्ध जीवन, उसके महान आश्चर्यकर्म, और उसकी नम्रता और दीनता का इतिहास दिया है। जब यीशु यहूदिया, सामरिया, और गलील के स्थानों में गया, उसने वहां भले काम किये। परमेश्वर ने हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक उपलब्ध कराई, और हमें इतिहास की बहुत सी बातों से परिचित कराया जैसे कि परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर यीशु का स्वर्गारोहण होना (प्रेरितों 1); प्रेरितों पर पवित्र आत्मा का उतरना जिसके फलस्वरूप कलीसिया की स्थापना हुई; यरुशलेम से लेकर रोमी साम्राज्य और पूरे संसार भर में सुसमाचार का फैलाव होना (प्रेरितों 2:38 और रोमियों 10:18)। फिर, पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित होते हुए पौलुस, याकूब, यूहन्ना, पतरस, और यहूदा सबने मिलाकर लगभग 21 पत्रियां लिखीं, जिनमें बताया गया है कि किस तरह से मसीहीयों को इस संसार

में रहते हुए अपना जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता है अर्थात् किस तरह से उन्हें ''बर्ताव करना चाहिए'' (1 तीमुथियुस 3:15)। आखिर में, यीशु का प्रकाशितवाक्य जो कि स्वर्गदूत द्वारा यूहन्ना को पतमुस नामक टापू में दिया गया था। इस किताब में यीशु की शैतान पर विजय और कलीसिया की संसार पर विजय की बात के बारे में घोषणा की गई है (प्रकाशितवाक्य 20 से 22 अध्याय)।

अब सवाल यह है, कि क्या मैं वो चाहता हूं जो परमेश्वर मुझसे चाहता है?

इस बात को समझना काफ़ी सरल है कि परमेश्वर को क्या चाहिए क्योंकि उसने यह बात अपनी सिद्ध इच्छा में प्रगट की है-

अब क्या हम मसीह में अपने मन के नए हो जाने से बदल जाएंगे या हम संसार के सदृश बन जाएंगे? (रोमियों 12:1-2)। यह एक ऐसा चुनाव है जो यह तय करेगा कि हम अनन्तकाल में कहां रहेगें।

अपने पहाड़ी उपदेश में यीशु ने मत्ती 7:21 में बड़ी ही स्पष्टता से कहा था कि ''जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु **वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।**''

मनुष्य को एक निष्कर्ष पर पहुंचने की आवश्यकता है!

अरियुपगुस पहाड़ पर पौलुस अपने ज़माने के महान बुद्धिजीवी व्यक्तियों के सामने प्रगट हुआ (प्रेरितों 17)। पौलुस ने बड़े ही दु:खी मन से इस बात का वर्णन किया था, कि किस तरह से एथेंस के लोग झूठे देवी-देवताओं और भिन्न-भिन्न प्रकार की मूरतों की उपासना कर रहे थें।

फिर, उसने उन्हें उस परमेश्वर के बारे में बताया जिसने ''पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया'' (प्रेरितों 17:24)। उसने उन्हें याद दिलाया कि, ''हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों 17:28)। आखिर में उसने उनसे कहा, ''परमेश्वर ने

एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है'' (प्रेरितों 17:31)। उस दिन जब पौलुस ने अपने प्रचार को समाप्त किया, ''कुछ तो ठट्ठा करने लगे, और कुछ ने कहा, 'यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे'.....परन्तु कुछ मनुष्य उसके साथ मिल गए, और विश्वास किया'' (प्रेरितों 17:32-33)।

किस तरह से आप सुसमाचार का स्वागत करेंगे? क्या आप यीशु मसीह का ठठ्टा उड़ाएंगे? क्या आप उसकी बातों को सुनने के लिये स्वयं इच्छा रखेंगे? क्या आप उसकी बातों का मज़ाक उड़ायेंगे।

क्या आप यीशु मसीह में विश्वास करने के लिये तैयार हैं?

आपके पास क्या विकल्प है? किसके पास आप जाएंगे? किसके पास अनंत जीवन की बातें है? निःसन्देह केवल यीशु के पास।

यदि इन बातों के विषय में और जानने के इच्छुक हैं तो हमसे सम्पर्क कीजिये:

भाई विनय डेविड

चर्च ऑफ़ क्राईस्ट

पोस्ट बॉक्स 4398, नई दिल्ली-110019

ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in

आपके मित्र बाइबल कोर्स करने के लिये हमें SMS भी कर सकते हैं:

09911719517

ORIGIN OF SOME DENOMINATIONS

Name	***Founder***	***Place***	***Date***
Roman Catholic	Constantine	Rome	4th Cent.
Lutheran Church	Martin Luther	Augsburg, Germany	1530
Presbyterian Church	John Calvin	Switzerland	1535
Anglican Church	King Henry VIII	England	1535
Baptist Church	John Smyth	London, England	1607
Methodist Church	John Wesley	London, England	1729
Evangelical Church	Jacob Albright	Pennsylvania, USA	1803
Morman Church	Jacob Smith, Jr.	New York, USA	1830
Seventh Day Adventist	Wm. Miller & Ellen G. White	Massachusetts. USA	1831
New Apostolic Church	Pruess	Hamburg, Germany	1862
Jehovah's Witnesses	Charles Russell	Pennsylvania, USA	1874
Pentecostal Holiness	Group	South Carolina, USA	1898
Aglipayan Church	Gregorio Aglipay	Philippines	1902
Iglesia Ni Cristo 1914	Felix Manalo	Manila, Philippines	1914
Assembly of God	Group	Arkansas, USA	1914
United Church of Christ in the Philippines	Sobrena	Philippines	1948

Jesus said: "*Every plant which my heavenly Father planted not, shall be rooted up*" (Matthew 15:13). The Psalmist wrote: "*Except the Lord build the house, they labour in vain that build it...*" (Psalm 127:1).